3

महारानी कैकेयी

महारानी कैकेयी

नंद कुमार मिश्र " नंद "

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

महारानी कैकेयी

महारानी कैकेयी

नंद कुमार मिश्र " नंद "

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द"

प्रकाशक :-

गोसाउनि स्मृति मंच, उफरदाहा, दरभंगा

प्रकाशन सहयोग :-

नागेन्द्र नाथ कश्यप
मूखर्जी नगर, दिल्ली
श्रीमती अमल देवी
झा कॉलोनी, मसाकचक, भागलपुर
श्री दिनेश झा
श्रीमती रंजना झा
बेल्हबार, मधुबनी
श्री दिनेश कुमार झा
श्रीमती बंदना झा
फुलकाही, दरभंगा

सर्वाधिकार सुरक्षित

सहयोग राशि : पचीस टाका मात्र।

मुद्रक : आशा प्रिंटिंग प्रेस, भागलपुर,
मो0 9431873121

समर्पण

पूज्यवर पिताजी

श्री बैद्यनाथ मिश्र

कैं चरण कमल मे

सादर

समर्पित

लेखकीय

बचपन सँ कैकेयीक कथा सुनिक' आ पढ़िक' इएह बुझाइत छल जे कैकेयी सनक स्वार्थी, कुटिल आ प्रपंची केओ दोसर नहिं भ' सकैत अछि । मुदा जखन आध्यात्म रामायण, बाल्मीकि रामायण के संगे श्री उमेशजीक रचित "कैकेयी का अंतर्द्वन्द्व" पढ़लहु तँ आँखि खुजि गेल । जे' कैकेयी रणभूमि में शम्बर दैत्य के मारि महाराज दशरथक प्राण बचा सकैत छथि । ओ हुनकर प्राण लेबाक लेल राम के वन नहि पठा सकैत छथि। जे कैकेयी राम के एतेक मानैत छलीह, जे मंथराक मुहे राज्याभिषेक क' चर्चा सुनि ओकरा सब सँ कीमती हार उपहारक रूप में देलन्हि, ओ पुत्र मोह में आबि राम के वन कोना द' सकैत छथि । मन में इएह भेल जे कतहु ने कतहु महारानी कैकेयीक विवशता होयतन्हि । पत्नीक कार्य पति के पतन सँ बचायब होइत अछि आ सैह तँ महारानी कैकेयी कयलन्हि अछि । भरत राज्यक अधिकारी होथि, ई तँ महाराज दशरथ आ महारानी कैकेयीक विवाह सँ पूर्वहि कैकेयीक पिता अश्वपति के महाराज दशरथ वचन देने छलाह । जकर साक्षी महामुनि गर्ग छलाह । महाराज दशरथ जिनकर नियम छलन्हि देल गेल वचन के पूरा करबाक आ ओ अश्वपति के देल वचन बिसरि गेलाह । महारानी कैकेयी भरत केर लेल राज्य माँगि क अपन स्वार्थी होयबाक परिचय नहि देलन्हि, बल्कि महाराज दशरथ केर देल गेल वचन के पूर्ण कयलन्हि आ एहि तरहें ओ महाराज दशरथ के नरक जयबा सँ बचौलन्हि ।

मायक कर्त्तव्य होइत अछि, ओ अपना पुत्रक विकास में पूर्ण सहयोग करए । रामक वन जायब तय छलन्हि । बिना राम के

वन गेने सबरीक उद्धार, सीता हरण, खर-दूषण बध, रावण बध, बालि बध, हनुमान सुग्रीव आ रामक मित्रता नहिं होइत । एहि में बाधक छलाह महाराज दशरथ । महारानी कैकेयी राम के महाराज दशरथक मोह-पाश सँ निकालि वन पठौलन्हि आ देवताक कार्य कयलन्हि, धरतीक भार उतार लन्हि, ऋषि-मुनिक संताप मेटौलन्हि आ सब सँ वेशी अपन पुत्रक यश कीर्तिक पताका सम्पूर्ण विश्व में फहरयबा मे सहायक बनलीह ।

हँ ! एहि में महारानी कैकेयी किछु कठोरताक प्रदर्शन अवश्य कयलन्हि, जे आवश्क छलैक । महाराज दशरथ जखन मुनि विश्वामित्रक संगे सुलभता सँ राम आ लक्ष्मण के नहि पठौलन्हि, तँ की ओ महारानी कैकेयीक अनुनय - विनय पर राम के वन पठबितथि । कथमपि नहि, आ तें महारानी कैकेयी के कठोरताक अभिनय करए पड़लन्हि ।

महारानी कैकेयी आ रामक बीच गुप्त मंत्रणा में बनवासक योजना तय भेल अछि । जकर स्पष्ट प्रमाण श्री उमेशजीक पोथी "कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व" में भेंटैत अछि । श्री उमेश जी 19 टा पोथीक अध्ययन क'क' एहि पोथीक रचना कयलन्हि अछि, जकर चर्चा ओ पोथीक अन्तिम पृष्ट में आभार ज्ञापन में करैत छथि । यथा - 1. बाल्मीकि रामायण 2. आनन्द रामायण 3. आध्यात्म रामायण 4. तिब्बती रामायण 5. सिंहली रामायण 6. पद्मपुरान 7. ब्रह्म पुरान 8. महाभारत 9. महाबीर चरितम् 10. सत्योपाख्यानम् 11. दशरथ कथानम 12. पउम चरिऊ 13. सेरी राम 14. अनामकम् जातक 15. श्री रामचरित मानस 16. कृतिवासी रामायण(बंगला) 17. मेघनाद बध(बंगला) 18. महिषासुर(बंगला) 19. वयं रक्षामः

महाराज दशरथ के जखन स्वतः अपना गलतीक बोध होइत छन्हि तँ ओ महारानी कैकेयी के दोषी नहि मानैत छथि । हुनका दोष मुक्त क' दैत छथि । यथा - उमेशजीक अनुसार,

"आह ध्यान आया अब मेरी है अन्तिम घड़ी
दोष कैकेयी का नहीं मैं तो अभिशप्त हूँ ।
व्यर्थ कटु वाक्य कहे मैने तुझे छोटी रानी
क्षमा करो देवि । ग्लानियों में गला जाता हूँ" ।

एहि तरहें जखन महाराज दशरथ हुनका दोष मुक्त क' देलन्हि जिनकर ओ अपराधी छलीह । तखन दुनियाँक लोक हुनका किएक दोषी मानैत अछि ।

प्रभु जानी कैकेय लजानी । प्रथम तासु गृह गये भवानी "

जखन श्रीराम स्वयं हुनका क्षमा क' देलन्हि, जिनका ओ वनवास देने छलीह । तखन दोसरक हृदय में एतेक दर्द किएक । मात्र अहीक लेल जे ओ सब घटना के अपना नजरि सँ देखि रहल अछि । ओ माता कैकेयी के एक सतमायक रूप में देखि रहल अछि । काश ! ओ एहि सब घटना के कैकयीक नजरि सँ देखैत । तखन ओ देखैत जे कैकेयीक हृदय मे कतेक बेदना अछि । आई एहन केओ माय वा पत्नी नहि अछि जे अपना माँथ पर कलंक क' टीका लगाक , अपना बेटा के ओजस्वी, यशस्वी बनायत, अपना पतिक वचनक रक्षा क' ओकरा लेल स्वर्गक बाट प्रसस्त करत आ इ सब कार्य मात्र माता कैकेयी सँ सम्भव भेल । ओ दुनियाँक नजरि मे खसि पड़लीह मुदा उफ तक नहि कयलन्हि । तें हम दृढ़ता पूर्वक कहब जे माता कैकेयी, महारानी कैकेयी सब सँ महान व्यक्तित्व छलीह । जे रामक आदर्शक आ महाराज दशरथक वचनक रक्षा कयलन्हि, अपना माँथ पर कलंकक टीका लगाक' ।

एहि कार्य में मामा जी श्री हरिशंकर झा प्राध्यापक राजकीय संस्कृत महाविद्यालय भागलपुरक सहयोगक लेल हम हुनकर अभारी छी । हुनकहि प्रयास सँ किछु दुर्लभ पोथी हमरा प्राप्त भ' सकल । हम अभारी छी अपना मित्र मंडलीक, कविवर राज कुमार जीक आ विदुषी धर्मपत्नी श्रीमती अमल देवीक जिनकर प्रेरणात्मक सहयोग हमरा सदैव भेंटैत रहल अछि । हम अपना धिया - पूता के सेहो सहयोगक लेल धन्यवाद दैत छियन्हि। हम अभारी छी डा0 अमरनाथ आ डा0 योगानन्द झा जीक, जे बेर-बेर दूरभाष पर एहि पोथीक सम्बन्ध में पूछताछ करैत रहलाह आ अपन निर्मल विचार दैत रहलाह अछि ।

नंद कुमार मिश्र ''नंद''

17 सितम्बर 2008

महारानी कैकेयी

1– सतमायक स्वरूप

सतमाय! हमरा समाजक वा सामाजिक व्यवस्थाक सब सँ अधलाह नाम वा सम्बन्ध । माय कतबहु खराब होअ' , मुदा ओ माये रहत । जेना कि दुर्गा सप्तसती मे उल्लेख अछि :–

कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति ।

अर्थातु पुत्र कुपुत्र भ सकैत अछि, मुदा माता कुमाता नहि भ' सकैत अछि। आ सतमाय कतबहु नीक किएक नहि होअ, ओकर आचरण,व्यवहार, चालि–ढ़ालि कतबहु नीक किएक नहि होअ' मुदा हमरा समाजक लेल ओ कौखन नीक नहि भ' सकैत अछि । ओकरा नीक व्यवहार क प्रति हमरा समाजक अवधारणा अछि " विष कुम्भं पयो मुखम् "

अर्थातु इ व्यवहार मात्र उपर सँ अछि। भीतर तँ किछु आर अछि। मिला जुलाक सतमाय माने अधलाहक प्रतीक।

हम एकटा एहन सतमाय केर कथा ल' क' उपस्थित छी, जे जग कल्याणक हेतु अपन संतान, जकरा ओ अपना पुत्र सँ वेशी मानैत छलीह, वनवास देलन्हि। वनवास देवाक कारण छलैक ओहि पुत्रक चरित्रक विकास आ लोक कल्याण। ओहि वनवासक प्रतिफलें कुल सहित रावण केर नास भेल आ रक्ष संस्कृति जे बिकसित भ रहल छल ओकर अंत भेल । एहि सँ मनुक्ख, देव, गंधर्व, यक्ष सब राहत केर सांस लेलक । धरतीक भार कम भेलनि आ ओहि पुत्रक सुयश तीनू लोक मे भेल । मुदा अयश के पेटारी ओ सतमाय बनलीह आ ओ सतमाय छलीह महराज दशरथ केर तृतीय रानी महारानी कैकेयी ।

ओना तँ प्रत्येक कर्मक दू टा पक्ष होइत अछि। एकटा नीक तँ दोसर अधलाह। जेना सुख–दुःख, दिन–राति, पाप–पुण्य, उदय–अस्त, आदि–अन्त, जन्म–मृत्यु, श्रृष्टि–प्रलय आदि । एहेन कोनो काज नहि अछि, जाहि सँ सबके खुशी वा सबके कष्ट होमए । सब काज मे किछु लोक के खुशी होइत छैक तँ किछु के कष्ट । जेना रावणक कार्य–कलाप सँ सामान्य लोक

के कष्ट होइत छलैक, तँ लंकावासी के खुशीक अनुभूति होइत छलैक । पुनः रावण के मरलाक बाद लंकावासी के दुःख भेलैक तँ सामान्य जन के खुशी भेलैक, मुदा राम वनवास सँ एहेन केओ नहि छल जकरा खुशी भेल होएतैक। सम्पूर्ण अयोध्या दुःखक सागर मे गोता लगा रहल छल। स्वयं महाराज दशरथ एहि दुःख के वर्दाश्त नहि क सकलाह आ प्राण त्यागि देलन्हि।

राम वनवास सँ जँ ककरहु खुशी भेलैक तँ मात्र दू गोटे के , एकटा मंथरा आ दोसर महारानी कैकेयी के । तेसर देवगण छलाह, जिनका प्रेरणा सँ इ कार्य भेल छल। मंथरा के एहि लेल खुशी भेलैक जे रामक वन गमन के कारण महाराज दशरथ केर मृत्यु भ' गेल आ ओकर पूर्व जन्मक प्रतिज्ञा जे ओ अश्वपति केर समक्ष कयने छल पूर्ण भ' गेलैक । महारानी कैकेयी के एहि लेल खुशी छलन्हि जे ओ रामक इच्छा सँ राम क काज कयने छलीह आ देवगण केर खुशीक कारण छल, रावन बध, जकर समय आबि गेल छलैक। अर्थातु राम वनवास सँ बहुत कम लोक के खुशी भेलैक आ बहुत वेशी लोक के कष्ट ।

अपने मोहम्मद हासेन–हुसैन केर कथा जनैत होयब । जिनका सहादत पर मुस्लिम लोकनि मुहर्रम मनाबैत छथि। हासेन–हुसैन दू भाय छलाह । दूनू भाय परम वीर छलाह । हुनका सँ सौसे धरतीक लोक त्रस्त छल। हुनका डर सँ धरती पर सँ इंसानियत उठि रहल छल। धर्म–कर्म केनिहार के अपार कष्ट छलैक। मानवताक रक्षा लेल किछु मनीषी लोकनि हुनका माय सँ निवेदन कयलथिन्ह । हुनकर माय विश्व कल्याणार्थ अपन पुत्रक बलिदान देबाक लेल तैयार भ गेलीह । दूनू पक्ष मे भयंकर युद्ध भेल । सात दिन धरि युद्ध चलैत रहल। हासेन–हुसैन केर माय दूनू गोटे के सात दिन धरि भोजन नहि देलन्हि। अन्त मे दूनू भाय बिना भोजन के लड़ैत–लड़ैत मरि गेलाह। एकर वादो हासेन–हुसैन केर माय के केओ अधलाह नहि कहलक । किएक तँ ओ बलिदान विश्व कल्याणक लेल कयल गेल आ ओ हासेन–हुसैन केर सतमाय नहि छलीह । जँ सतमाय रहिताथि तँ हुनकहु ओएह गति होइत जे महारानी कैकेयी के राम वनवासक उपरान्त भेल छलन्हि । किएक तँ हुनका कपार पर सतमायक मोहर जे लागल छलन्हि । ते हुनका द्वारा राम के वनवास देब समाज के उचित नहि बुझना गेलैक । चाहे ओहि मे जन कल्याण होइक वा स्वयं रामक कल्याण ।

बेटीक विदाई मे माय–बाप के बेटीक बिछोह सँ अपार कष्ट होइत छैक। मुदा ओ बेटीक कल्याणार्थ आ परम्पराक निर्वाह हेतु ओहि बिछोह के बर्दास्त करैत अछि ।

एकटा किमवदन्ती अछि :–

बंगाल मे एकटा भादरी ब्राह्मण छलाह आ नाम छलन्हि काल चन्द्र राय (काला पहाड़) आ पिता छलथिन्ह दीना नाथ राय । काल चन्द्र देखबा सुनबा के बड़ दीब छलाह । हुनक माँ आ बाबूजी बचपनहि मे स्वर्गीय भ' गेलथिन्ह आ पालन–पोषण दीदी अर्थातु पिताक बहिन द्वारा भेलन्हि। काल चन्द्र दिव्य प्रतिभाक लोक आ प्रकाण्ड पंडित छलाह। ओ नित्य शिव मंदिर मे पूजाक लेल जाइत छलाह। हुनकर रूप–रंग देखि केओ बालिका मोहित भ' सकैत छल आ सैह भेल। हुनकर ललाटक आभा आ रूप–रंग देखि ओहिठामक सुल्तानक बेटी के काल चन्द्र सँ प्रेम भ' गेलैक । जकर कोनो आभास काल चन्द्र के नहि भेलैक। एक दिन ओ मंदिर सँ आपस अपन घर जा रहल छल आ ओही बाट मे सुल्तानक हवेली सेहो छलैक । अचानक सुल्तानक सिपाही ओकर बाट छेकि लेलक आ बाजल "अहाँ, के तुरंत सुल्तानक दरबार मे हाजिर होएबाक अछि ।" सिपाही सब ओकरा चारू कात सँ घेरि लेलक । ओ देहो दशा सँ खूब मजबूत लोक छल। चाहैत तँ सब सिपाही के धकिया क' भागि सकैत छल मुदा ओहो अनुशासन प्रिय छल। ओ सिपाही सँ पूछलक; कोन कारण सँ हमर बजाहटि भेल अछि। सिपाही कारण स्पष्ट नहि क' सकल। ओ सिपाहीक संग सुल्तानक दरबार मे उपस्थित भेलाह । सुल्तानक आदेश भेलैक; हे ब्राह्मण कुमार! हमर बेटी अहाँ सँ प्रेम करैत अछि। तैं हमर ई आदेश अछि जे अहाँ हमरा बेटी सँ विवाह करू। ओहि दरबार मे सुल्तानक बेटी सेहो उपस्थित छल मुदा काल चन्द्र ओकरा दिश तकबो नहि केलक आ बाजल; "मुदा हम तँ हुनका सँ प्रेम नहि करैत छी। हम तँ हुनका देखनहु नहि छी, एहेन स्थिति मे अहाँक आदेश उचित नहि अछि। दोसर गप्प हमर आ अहाँक धर्म एक नहि अछि। तैं ई विवाह कोनहु स्थिति मे ठीक नहि होयत। "

सुल्तान बजलाह; "अहाँ हमर धर्म स्वीकार क' लीअ।"

काल चन्द्र; "कदापि नहि"

सुल्तान; " इ हमर आदेश अछि।"

कालचन्द्र; "हमरा मान्य नहि अछि।"

सुल्तान; "परिणाम जनैत छी ?"

कालचन्द्र; "परिणामक चिन्ता कायर आ डरपोक करैत अछि।"

सुल्तानक आदेश पर काल चन्द्र के फाँसी चढ़ाबक तैयारी होमए लागल। जखन ओकरा फाँसी पर चढ़ाओल जा' रहल छल। ओकरा चेहरा पर कनेको शिकन वा परेशानी नहि झलकि रहल छल। ई देखि सुल्तानक बेटी के बर्दास्त नहि भेलैक। ओ सबटा गप्प सुनि रहल छलैक। ओ सोचलक हम एकरा सँ प्रेम करैत छी मुदा ओ तँ नहि करैत अछि। एहि मे ओकर की कसूर। ओ तँ हमरा देखनहु नहि अछि। हम तँ घरक छत पर देखलहु आ मोहित भ गेलहु । जँ हमरा कारण ई फाँसी परत तँ धरती पर सँ एकटा निर्दोष आ दिलेर उठि जायत। हमरा नरक भोगए पड़त आ एकरा मुइने हमरा की भेटत ? ओ जोर सँ आवाज देलक--- रूकि ----जाउ--- आ बाप सँ निवदेन कयलक जे अपन आदेश आपस ल क ब्राह्मण कुमार के छोड़ि देल जाय। ओहि क्षण काल चन्द्र सेहो सुल्तानक बेटी के देखलक । ओकर सुन्दरता आ विचार सँ ओ बड़ प्रभावित भेल। ओकरहु सुल्तानक बेटी सँ प्रेम भ' गेलैक । ओ ओकरा संग विवाह करबाक लेल तैयार भ' गेल, एहि शर्त्त पर जे धर्म परिवर्त्तन नहि करत आ सुल्तानक बेटी सेहो तैयार भ' गेल। एहि अन्तर्जातीय विवाह सँ काल चन्द्रक समाज ओकरा बहिष्कृत क' देलक । ओ अपना समाजक लोक के बहुत बुझेबाक प्रयास कयलक। ओ सुल्तानक बेटी सँ कबूल करौने छल जे विवाहोपरांत ओ हिन्दु धर्म स्वीकार करत आ हिन्दु रिति रिवाज सँ पुनः विवाह करत। मुदा ओकर समाज ओकर किछु नहि सुनलक। ओ दूनू तंग आबि क इस्लाम धर्म स्वीकार क' लेलक आ प्रतिशोधक ज्वाला मे धधकि उठल। ओहिठाम सँ ओकर नाम काला पहाड़ भेल। काला पहाड़ कतेको मंदिर, यज्ञ स्थली के ढ़ाहि क खसा देलक। ओकरा सोझां जे केओ पड़ैत छल, ओकरा मारि यमपुर पहुँचा दैत छलैक। ओकरहि परिणाम सुल्तानगंजक पारवती मंदिर अछि जे काला पहाड़क हाथे ढ़ाहि खसाओल गेल। एहि तरहें ओ बाटक मंदिर सब के तोड़ैत काशी विश्वनाथ मंदिर पहुँचल। ओहिठाम ओकर दीदी (बुआ) ओकर बाट छेकने छलैक । काला पहाड़ जँ ककरहु गप्प मानैत छल तँ मात्र अपना दीदीक। हुनका आदेशक उल्लंघन नहि क' सकैत छल। दीदी

के ओ बड़ मानैत छल। ओकरा दीदी के धर्म गुरू सब आतंकित आ त्रस्त भ' पठौने छलथिन्ह। दीदी के देखैत ओ बाजल, अहाँ बगल भ' जाउ, हमर बाट छोड़ि दीअ। ओकर दीदी बजलीह,'' हम बाट पर सँ नहि हटब जँ अहाँ के जयबाक अछि तँ हमरा लाश पर सँ जाऊ।'' ई सुनि काला पहाड़ अपना छाती मे कटार भोकि अपन अन्त क' लेलक । ओकरहि वियोग मे ओकर दीदी सेहो प्राण त्यागि देलन्हि। एहि तरहें काला पहाड़क मृत्युक कारण ओकर दीदी भेलीह मुदा ओकरा दीदी के तँ केओ उलहन नहि देलक। किएक तँ ओ सतमाय नहि छलीह।

पूर्व काल मे राजा महाराजाक धिया–पूता शिक्षा ग्रहण करबाक लेल गुरू कुल अर्थातु जंगल जाइत छलाह । जेना कि अपने सब के विदित होयत जे श्री कृष्ण आ बलराम सेहो संदीपन मुनिक आश्रम में शिक्षा ग्रहण कयलन्हि आ गुरू कुलक परम्परानुसारे जँगल सँ जारनि तोड़ि क' आनैत छलाह। झरना सँ जल भरि क' आनैत छलाह । गुरू आ गुरूमाताक सेवा करैत छलाह। सब तरहें गुरू के प्रसन्न रखबाक चेष्टा करैत छलाह। गुरूक आज्ञाक पालन करैत ब्रह्म चर्यक पालन करैत छलाह। तखन गुरूक–कृपा–सँ विद्या प्राप्त होइत छलैक। जँ ओही उद्देश्य सँ माता कैकेयी सेहो राम के वनवास देने होथि तँ एहि मे अनर्गल की ?

आब प्रश्न उठैत अछि, जँ महारानी कैकेयी शिक्षा ग्रहण करबाक उद्देश्य सँ राम के वनवास देलन्हि तँ व्यवहार मे एतेक कठोरता किएक यथा

कहइ करहु किन कोटि उपाया ।
इहाँ न लागिहि राउरि माया ।।

(राम चरित मानस)

व्यवहारक कठोरता ई साबित करैत अछि जे रामक प्रति हुनकर जे भाव पूर्व मे छल ओ केवल देखाबटी छल। राम सँ हुनक प्रेम छलावा छल। जाहि मे उपर सँ तँ प्रेम टपकि रहल छल मुदा भीतर सँ कटुता भरल छल।

हमरा दृष्टिये उपरोक्त तथ्य सही नहि मानल जा' सकैत अछि। वनवासक समय वा वनवासक लेल वरदान मँगवा काल मे कैकेयीक कठोरता बनावटी छल आ तकर कारण दू टा छलैक। एकटा कारण छलैक महाराज दशरथक रामक प्रति अगाध स्नेह यथा :–

जिऐ मीन बरू बारि बिहीना ।
मनि बिनु फनिकु जिऐ दुःख दीना ।।
(राम चरित मानस)

माँछ बिना जलक जीवि सकैत अछि, मणियुक्त सांप बिना मणि केर जीवि सकैत अछि मुदा महाराज दशरथ बिना रामक जिवि नहि सकैत छथि। एहेन स्थिति मे जँ महारानी कैकेयी कठोर नहि बनितथि तँ हुनकर राम वन नहि जाइत; मुनि लोकनिक आर्सिवाद नहि पबैत, रावनक बध नहि होइत आ राम केवल दशरथ नंदन राम रहि जइतथि। विश्व विजयी त्रिभुवन पति राम नहि कहबितथि आ ई काज महारानी कैकेयीक बिना दोसर केओ केओ नहि सकैत छलीह।

दोसर कारण छल बिना कठोर व्यवहारे शिक्षा ग्रहण करब कठिन अछि। शिक्षा ग्रहण करक लेल आवश्यक अछि, घर–द्वारि छोड़िक रहब, ब्रह्मचर्यक पालन करब, परिवारक मोह त्यागब आ बिना कठोर बनने इ सम्भवो नहि अछि। आई शिक्षाक स्तर एतेक किएक खसि पड़ल अछि। विद्यार्थी के सब विषय मे टूयूशन चाही। ओकर एकटा कारण छैक, कठोरता आ अनुशासन शिक्षा सँ समाप्त भ' गेल छैक। पूर्वक समय मे शिक्षक के अधिकार छलैक जे ओ विद्यार्थी के पढ़बाक लेल कठोर सँ कठोर व्यवहार क' सकैत छल, ओकरा पिटि सकैत छल मुदा आई काल्हि ठीक ओकर उन्टा भ रहल छैक । विद्यार्थीक हाथे शिक्षके पीटा रहल छथि। विद्यार्थी के परीक्षा मे चोरी करबाक अनुमति नहि देला सँ इएह सब होइत छैक। हंगामा शुरू भ' जाइत अछि। ओहि विषय के परीक्षा पुनः लेल जाय; एहेन नारा लगैत अछि आ शिक्षक ओकरा बहुमत के देखि झुकि जाइत छथि। ओकरा ओकरहि अनुकूल चलए दैत छथि आ से माइयो–बाप के नीके लागैत छैक ।

2– राजनीतिक दूरदर्शिता

कोनहु राष्ट्रक–उन्नयन हेतु द्रष्टा के होयब आवश्यक होइत अछि। द्रष्टाक कार्य पर्दाक भीतर सँ कार्य करब होइत अछि। ओकरा कार्य प्रणाली सँ ओकर उद्देश्यक विषय मे जानब कठिने नहि असंभव होइत अछि। ओ सब सँ पहिने पात्रक चुनाव करैत अछि। ओकर बाद ओकर विकास आ तकर बाद ओकरा मॉथ पर मुकुट सेहो राखि दैत अछि। जेना नंद वंशके खत्म करबा मे आ चन्द्रगुप्तक मॉथ पर मुकुट धरबा मे चाणक्यक भूमिका एक द्रष्टाक रूप मे प्रस्तुत कयल गेल अछि। द्रष्टा कवि होइत छथि, द्रष्टा ऋृषि होइत छथि। जखन राष्ट्रक पतन होमए लागैत अछि तँ ओकरा केओ ने केओ द्रष्टा देखैत अछि । ओ ओकर मार्ग प्रशस्त करैत अछि। राम चरित मानस केर चारि टा द्रष्टा छथि, " गर्ग, विश्वामित्र, वशिष्ठ जी आ महर्षि बाल्मिकि ।

बाल्मिकी कवि छथि, गायक छथि ओ घटना सँ पूर्व एकर वर्णन कयने छथि, तैं ओ द्रष्टा छथि आ विश्वामित्र ओकरा मूर्त रूप प्रदान कयलन्हि तैं ओ विधायक भेलाह ।

राम कालीन भारत रक्ष संस्कृति सँ आक्रान्त छल। जकर नेता छल लंकापति रावण। रावण विद्वानक संग महापंडित, कर्मकाण्डी आ राजनीतिक प्रकाण्ड विद्वान सेहो छल। ओकर रक्ष संस्कृतिक संचालन पंचबटी सँ होइत छलैक। ओकर आसुरी शक्तिक उपयोग राजा–महाराजाक संग ऋृषि–मुनि पर वेशी होइत छलैक। राजा–महाराजा के हरा क' हुनकर धंन ल' क' तँ हुनका ओ छोड़ियो दैत छल मुदा मुनि महात्मा के ओकर राक्षसी सेना मारि क' खा' जाइत छलै। जकर प्रमाण मानस मे अछि, यथा :– ।

"अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया ।।
जानत हूँ पूछिय कस स्वामी । सब दरसी तुम्ह अंतरजामी ।।
निसिचर निकर सकल मुनि खाए। सुनि रघुवीर नयन जल छाए "
(राम चरित मानस, अरण्य काण्ड)

ओ विद्वान छल आ तैं ओ बुझैत छल जे जखन केओ हमरा मारक लेल, हमर संस्कृति नष्ट करबाक लेल आओत, तँ ओकर श्रष्टा आ द्रष्टा इएह मुनि–ऋृषि बनताह। तैं हिनका नष्ट क' दी ।

प्राचीन काल मे शिक्षा–दीक्षाक व्यवस्था गुरूक आश्रम के रहैत छलैक। गुरू वा ऋृषि लोकनिक आश्रम–गाम–घर सँ दूर वन मे एकान्त स्थान मे रहैत छल। जाहिठाम विद्यार्थीक पढबाक– लिखबाक, धनुष विद्या, अस्त्र–शस्त्रक निर्माण आदिक व्यवस्था रहैत छलैक। रावण के राजा–महाराजा सँ डर नहि छलैक। ओकरा डर छलैक तँ तपस्वी केर। राजा–महाराजा के तँ ओ जीत सकैत छल आ जाहिठाम ओ कमजोर पड़ैत छल वा हारि जाइत छल, दोस्ती क' लैत छल। जेना कि बानर राज बालि सँ कयने छल। मुदा तपस्वीक आश्रम के ओ ध्वस्त क' दैत छलैक। तँ राम के वनवासक आवश्यकता छलन्हि।

युग द्रष्टा–महामुनि विश्वामित्र कँ जखन आभास भेलनि जे रामक जन्म महाराज दशरथक ओहिठाम भ' चुकल अछि। तखन ओ याचक के रूप मे महाराज दशरथक ओहिठाम गेलाह। ओहिठाम हुनका वशिष्ठ जी क' सहयोग सेहो भेटलन्हि।

श्री उमेश जी द्वारा रचित "कैकेयी का अन्तर्द्वंद्व" क' अनुसार युग द्रष्टाक रूप मे महामुनि विश्वामित्रक संग दोसर महत्वपूर्ण पात्र महारानी कैकेयी छलीह, जे विश्वामित्रक बनाओल योजना मे रामक सहयोग केलन्हि । श्री उमेश जी क' अनुसारे अन्य कविक वा रचनाकारक द्वारा प्रत्यक्ष रूपँ महारानी कैकेयीक चरित्र के विगारि क प्रस्तुत कयल गेल अछि। मुदा ई उचित बुझना नहि जाइत अछि। जे कैकेयी रणभूमि मे महाराज दशरथक मूर्छितावस्था मे स्वयं युद्धक संचालन क' दुश्मन के परास्त करबाक अदम्य साहस बुद्धि राखैत होथि, ओ एकटा अदना दासीक कहला सँ एतेक कठोर आ घृणित निर्णय नहि ल' सकैत छथि। ओ तँ केवल रामक विकास आ राष्ट्र कल्याणक लेल एतेक कठोर भ' गेलीह।

जखन महामुनि विश्वामित्र यज्ञक रक्षार्थ राम आ लक्ष्मणक याचना महाराज दशरथ सँ करैत छथि। यथा :–

"असुर समूह सताबहिं मोही। मै जाचन आयउँ नृप तोही" ।।
अनुज समेत देहु रघनाथा । निसिचर बध मै होब सनाथा ।।

(राम चरित मानस, बाल काण्ड)

अर्थातु हे राजन! राक्षस समुदाय हमरा यज्ञ करबा मे बाधा उत्पन्न

क' रहल अछि आ तँ हम अपनेक ओहिठाम याचक बनिक आयल छी। हमरा अनुज सहित रघुनाथ जी चाही। जाहि सँ निश्चिरक बध करबा सकी।

काकपक्षधरं वीरं ज्येष्ठं मे दातुमर्हसि ।
शक्तो ह्येष मयागुप्तो दिव्येन स्वेन तेजसा ।। 9
राक्षसा ये विकर्तारस्तेषामपि बिनासने ।
श्रेयश्चास्मै प्रदास्यामि बहुरूपं न संशयः ।। 10
"त्रयानांमपि लोकानां येन ख्यातिं गमिष्यति ।
न च तौ राममासाद्य शक्तो स्थातुं कथंचन ।। 11

(बाल्मिकि रामायण, बाल काण्ड, सर्ग–19)

अर्थातु अहाँ अपन काकपक्षधारी सत्य पराक्रमी शूरवीर ज्येष्ठ पुत्र श्री राम के हमरा देल जाउ। इ हमरा सँ सुरक्षित रहि अपन दिव्य तेज सँ ओहि राक्षस कँ बध करबा मे समर्थ छथि। हम हिनका अनेक प्रकारक श्रेय–प्रदान करब, जाहि सँ हिनकर नाम तीनू लोक मे विख्यात भ' जायत। ओहि राक्षस के श्रीराम के छोड़ि दोसर केओ नहि मारि सकैत अछि। इ सुनि राजा दशरथ बेहोश भ' गेलाह। पुनः होश मे अयलाक बाद बजलाह " हे महर्षि हमर राम तँ एखन सोलहो वर्ष पूर्ण नहि कयलक अछि। हम ओकरा राक्षस सँ युद्ध करबाक लेल योग्य नहि बुझैत छी। हम अहाँक संग अपन अक्षौहिणि सेना ल' क' राक्षस सँ युद्ध करबाक लेल चलैत छी। मुदा राम के छोड़ि दीअ। हम स्वयं हाथ मे धनुष बान नेने अहाँक यज्ञक रक्षा करब। आ जा धरि शरीर मे प्राण रहत, निश्चिरक संग लड़ैत रहब। राम एखन युद्ध कला मे दक्ष नहि भेलाह अछि। आ दोसर गप्प हम रामक बिना एक क्षण नहि रहि सकैत छी। राम बिना महाराज दशरथक हाल ओहने होयत जेहन मणि युक्त सांपक मणि निकाललाक बाद आ माँछ के जल सँ बाहर निकाललाक बाद होइत अछि। "

मुदा की एक व्यक्ति वा एक राजाक लेल पूरे समाज वा देश कँ खतरा मे छोड़ल जा सकैत अछि ? एक नारी के बचाबक लेल सहस्त्र नारीक अपमान कराओल जा सकैत अछि ? कथमपि नहि। युग द्रष्टाक लेल इ सब कोनो माने नहि राखैत अछि । देशक सुरक्षा क' लेल व्यक्तिक बलिदान देल जा सकैत अछि यथा तुलसीदास जी महाराज कहैत छथि :–

अरध तजहि बुध सरबस जाता ।

(रामचरित मानस)

वशिष्ठ जी तँ सेहो जनैत छलाह जे रामक जन्म किएक भेल अछि आ ओ राज्याभिषेक सँ पूर्व की, की करताह यथा :–

"देव कार्यार्थ सिद्धयर्थ भक्तानां भक्ति सिद्धये।
रावणस्य बधार्थाय जातं जानामि राघवः ।। 24
(अध्यात्म रामायण, अयोध्या काण्ड,सर्ग–02)

मुदा एकरा गुप्त राखब आवश्यक छलैक । द्रष्टाक तँ काजे इएह अछि। ओ की करए चाहैत अछि, प्रकट नहि करैत अछि । तथापि बात के बदलिक वशिष्ठ जी महाराज दशरथ के बुझा–सुझा क राजी कयलन्हि आ विश्वामित्रक काज के आसान बना देलन्हि। विश्वामित्र राम–लक्ष्मण के ल' गेलाह। यज्ञक रक्षा तँ मात्र बहाना छल। ओ हिनका सब तरहक शिक्षा–दीक्षा आ अस्त्र–शस्त्र सँ परिपूर्ण क देलन्हि। ओ हुनका रावण सँ लड़बाक योग्य बना देलन्हि।

प्रश्न उठैत अछि, विश्वामित्र राम–लक्ष्मण के सब तरहे युद्ध विद्या मे निपुण क' देलन्हि। हुनका धनुष यज्ञ आ राम विवाह सँ की प्रयोजन छलन्हि।

श्री जानकी जी शक्ति स्वरूपा छलीह आ हुनकहि तँ रावण बध मे कारण बनबाक छलन्हि यथा :–

"तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा । जौं लगि करौं निसाचर नासा ।। "
(राम चरित मानस, अरण्य काण्ड)

तँ श्री राम आ जानकीक मिलन आवश्यक छलन्हि आ अही नाम पर तँ महाराज दशरथ विश्वामित्रक संग राम–लक्ष्मण के पठौने रहथि। दोसर गप्प जखन रावणक अत्याचार बढ़ि गेल तँ रावण आ ओकर अनुचर तँ आकाश मार्ग सँ भ्रमण करैत छल, मुदा एक राज्यक लोक, दोसर राज्यक लोक सँ भेट नहि करए, एकरा लेल सब नदीक पुल तोड़ि देने छलैक । एक राज्य सँ दोसर राज्यक आवागमन केर बाट अवरूद्ध भ' गेल छलैक। श्री राम जानकीक विवाह तँ मात्र बहाना छल। असली उद्देश्य छल पुल निर्माण कराक एक राज्य के दोसर राज्य सँ जोड़बाक । यथा :–

"आवत जानि भानुकुल केतु । सरितन्हि जनक बँधाए सेतु ।। "

(राम चरित मानस, बाल काण्ड)

युग द्रष्टा इहो देखैत छथि जे युग निर्माण मे कम सँ कम परिश्रम हो, कम सँ कम नुकसान हो आदि। आ एकरा लेल इ आवश्यक छलैक जे युद्ध स्थल अयोध्या नहि बनय। कोन्हु राष्ट्र अपना जमीन पर युद्ध स्थल बनेबाक लेल तैयार नहि होइत अछि। तँ एकरा लेल दंडकारण्य केर चयन कयल गेल। आ ओहिठामक व्यवस्थाक लेल महर्षि भारद्वाज आ अगस्त पहिनहि सँ पहुँचल छलाह आ प्रतीक्षा करैत छलाह अपना नायक केर। विश्वामित्र इहो जनैत छलाह जे रावण केर कुल सहित नास करबाक लेल ओहेन व्यक्ति चाही जे चौदह वर्ष तक वनवासी होथि आ एकरा लेल राम लक्ष्मण के छोड़ि दोसर केओ नहि छल। दोसर गप्प राम जँ अयोध्याक सेना ल क रावण सँ लड़बाक लेल जइतथि तँ रावणक गुप्तचर एतेक तेज छल जे ओकरा तुरत एकर जानकारी भ जाइत छलैक। जखन हनुमान जी मच्छर केर रूप ध' क' लंका मे प्रवेश करैत छथि तँ लंकिनि जे द्वारक रक्षक अछि, बुझि जाइत अछि। आ हनुमान जी के पकड़ि लैत अछि।

मध्य समुद्र मे एकटा निश्चिर छल जे आकाश मार्ग सँ उड़निहार के पकड़ि लैत छलैक। यथा :–

"निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई । करिमाया नभु के खग गहई ।।
गहई छाहँ सक सो न उड़ाई। एहि विधि सदा गगनचर खाई।।"
(राम चरित मानस)

एतेक एडभांस छल रावणक' नेटवर्क। ओकरा नेटवर्क सँ बाँचब कठिन छलैक। जँ युद्ध स्थल अयोध्या बनैत त अयोध्या वा अयोध्यावासी के भारी क्षति होइत। जेना कि अहाँ जनैत छी, जखन अनेको बेर मथुरा पर जरासंधक आक्रमण भेल तँ श्रीकृष्ण मथुरा आ मथुरावासीक रक्षाक लेल ओहिठाम सँ भागि क द्वारिकापुरीक स्थापना कयलन्हि। आ हुनका हटैत जरासंध सेहो मथुरा पर आक्रमण करब छोड़ि देलक। तँ रावण बध केर लेल रामक वनवास आवश्यक छलैक आ इ काज महारानी कैकेयी के छोड़ि दोसर केओ नहि क सकैत छल। ओना तँ महारानी कैकेयी के महाराज दशरथ सब सँ वेशी मानैत छलाह, मुदा जखन रामक गप्प होयत, तखन महाराज दशरथ ककरहु नहि सुनि सकैत छथि। चाहे ओ गुरू वशिष्ठे किएक ने होथि। ओ प्रजा के रामक राज्याभिषेक लेल वचन द' देने छलाह आ

महाराज दशरथ वचनक रक्षाक लेल प्राण सेहो द' सकैत छलाह। यथा :–

रघुकुल रिति सदा चलि आई। प्राण जाई बरू वचन न जाई।।"

(राम चरित मानस)

मुदा वचन के तँ वचने सँ काटल जा सकैत अछि आ ओ कटबाक सामर्थ सेहो महारानी कैकेयी मे छलन्हि। ओ राष्ट्र कल्याणक लेल, मानवताक रक्षार्थ, देवताक इच्छानुसार, पृथ्वीक बोझ उतारबाक लेल इ जहर केर घोंट पिलनि । जे राम सेहो चाहैत छलाह । यथा :–

श्री उमेशजीक अनुसार–

"कर्त्तव्य होता है कठोर, नही कोमल कभी,
कर्त्तव्य होता है प्रचण्ड भी हुताशन से,
कर्त्तव्य होता है भीषण, नही मधुर अम्ब,
कर्त्तव्य होता है सुतीक्ष्ण,शाणित खड्ग से "

(कैकेयी का अंतर्द्वंद्व, पृष्ट – 23)

अर्थातु महारानी कैकेयी सेहो रामक प्रेम मे पागल छथि आ महाराज दशरथ सँ अधिक। मुदा वनवासक अस्त्र तँ मात्र हुनकहि लग अछि। सब कारण के उद्देश्य होइत अछि। राम वन जा रहल छथि एकर कोन कारण भ' सकैत अछि। लोक तरह–तरह के अटकल बाजी क' सकैत अछि । एहि अटकल बाजी मे कतहु असली उद्देश्य नहि उजागर भ' जाय, एकरहि लेल सतमायक चयन कयल गेल। जाहि सँ लोक इ बुझए जे राम वनवासक कारण मात्र गृह कलह छल आर किछु नहि। एहि सँ द्रष्टाक उद्देश्य नुकायल रहि गेल आ इएह तँ रचनाकारक चातुरी अछि। मुदा श्री उमेशजीक रचित "कैकेयी का अन्तर्द्वंद्व" क अनुसारे राम स्वयं महारानी कैकेयी के अपना मोह जाल मे फंसा क महाराज दशरथ सँ वरदान मँगबाक लेल विवश क देलन्हि। इहो तथ्य समचिन लागि रहल अछि।

3– महारानी कैकेयीक उद्देश्य आ त्याग

महारानी कैकेयीक एक मात्र उद्देश्य छल रामक सुयश, रामक जय–जयकार आ एकरा लेल ओ किछु क' सकैत छलीह आ कयलन्हि सेहो। ओ अपना माँथ पर कलंक क' टीका लेलनि। भरत सनक पुत्र सँ हाथ धोलनि। भरत हुनका जीवनभरि माय नहि कहलन्हि आ स्वयं महाराज दशरथ जिनकर ओ देवासुर संग्राम मे प्राण – रक्षा कयने रहथि, त्यागि देलथिन्ह। यथा :–

अगृह्लां यच्च ते पाणि मग्निं पर्यणयं च यत् ।

अनुजानामि तत् सर्वमस्मिंल्लोके परत्र च ।। 8

(बा0 रा0 अ0 का0 सर्ग 42)

अर्थातु हम जे अहाँ संग विवाह कयलहु, अग्निक परिक्रमा कयलहु, अहाँक संग हमर जे कोनो संबंध अछि, ओकरा हम खतम करैत छी। मुदा एकर वादो महारानी कैकेयी अपना संकल्प पर अडिग रहलीह आ टस सँ मस नहि भेलीह। भरत कतेक हुनकर अपमान कयलन्हि; यथा :–

दुःखे मे दुःखमकरोर्व्रने क्षारमिवाददा ।
राजानं प्रेतभावस्थं कृत्वा रामं च तापसम् ।। 3

(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग 73)

अर्थातु अहाँ महाराज के परलोक वासी वनाक' आ राम के वनवास द' क' हमरा दुःखक सागर मे ठेलि देलहु अछि। अहाँ हमरा कुलक नास करबाक लेल कालरात्रि बनि क' आयल छी।

विनाशितो महाराजः पिता मे धर्मवत्सलः ।
कस्मात् प्रव्राजितो रामः कस्मादेव वनं गतः ।। 7

(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग 73)

अर्थातु अहाँ हमरा धर्म वत्सल पिताक विनास किएक कयलहु आ पैघ भाय श्री राम के घर सँ किएक निकालि देलहु। ओहो अहाँक आज्ञा मानि किएक वन चल गेलाह । श्रीराम तँ धर्मात्मा छथि । ओ जनैत छथि जे गुरूजनक संग कोना व्यवहार करैक चाही। आ तँ हुनकर व्यवहार जे माता संग होयबाक चाही, सएह कयलन्हि। माता कौशल्या अहाँक संग बहिन सनक व्यवहार राखैत छथि मुदा अहाँ केहन पापिन छी जे हुनका पुत्र के घर सँ

निकालि वन पठा देलहु।

मातृरूपे ममामित्रे नृशंसे राज्यकामुके ।
न तेऽ हमभिभाष्योऽस्मि दुर्वृत्ते पति धातिनि ।। 7

(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग 74)

अर्थातु राज्यक लोभ मे पड़ि एहन कठोर आ क्रूर कार्य केनिहारि कुलकलंकिनी हमर माय नहि भ' सकैत अछि। आई सँ हम अहाँक पुत्र नहि छी।

बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी ।
सकल कपट अध अवगुन खानी ।।

(राम चरित मानस अ॰ का॰)

अर्थातु भरत माता कैकेयीक लेल कहैत छथि जे विधाता सेहो स्त्रीक हृदय केर गति के नहि जनैत छथि। स्त्रीगणक हृदय तँ कपट पूर्ण पाप आ अवगुनक खान अछि। अहाँ पर महाराज कोना विश्वास कयलन्हि । बुझाइत अछि मरबा कालक कारणे विधाता हुनकर सब ज्ञानक हरण क' लेलथिन्ह । एहेन कोन जिव एहि जग मे अछि, जकरा रघुनाथ प्रिय नहि छथि।

भरत माता कैकेयी सँ कहैत छथि एक समय केर बात छैक । धर्म के जान निहारि आ देवता सँ सम्मानित सुरभि (कामधेनु) पृथ्वी पर अपना दूटा पुत्र के हर जोतैत–जोतैत अचेत होइत देखलन्हि । दुपहरक समय छलैक आ सूर्यक किरण के गर्मी सेहो अधिक छलैक। ओ वरद थाकि क अचेत भ' गेल छल । ओकरा ओहि अवस्था मे देखि सुरभि के आँखि सँ नोर छलकि गेलन्हि। आ ओहि नोरक दू बून्द देवराज इन्द्रक देह पर खसि पड़ल, जे ओही समय मे पृथ्वी पर ओही बाटे कतहु जा रहल छलाह। देह पर नोर खसैत ओ उपर देखलन्हि तँ, देखैत छथि जे आकाश मे ठाढ़ि भेलि सुरभि अपन पुत्रक हाल पर कानि रहल छथि । यशस्विनी सुरभि केर इ हाल देखि बज्रधारी देवराज इन्द्र उद्विग्न भ' गेलाह आ हाथ जोड़ि कनबाक कारण पूछलन्हि। सुरभि पूर्ण वृतान्त सुना देलन्हि। देवराज इन्द्र के कहए पड़लन्हि जे पुत्र सँ बढ़ि क' केओ नहि होइत अछि आ देवी सुरभि एहि जग मे सब सँ श्रेष्ठ माय छथि। यथा :–

इन्द्रो ह्यश्रुनिपातं तं स्वगात्रे पुण्यगन्धिनम् ।
सुरभिं मन्यते दृष्ट्वा भूयसीं तामिहेश्वरः ।। 26

(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग 74)

अर्थातु सहत्र पुत्र के रहैत दू पुत्रक लेल माय के एतेक कष्ट भ' सकैत छैक, तँ माता कौशल्या जिनका मात्र एकेटा पुत्र छन्हि, कतेक कष्ट भेल होयतैन्हि आ एकर कारण मात्र अहींटा छी।

एक पुत्रा च साध्वी च विवत्सेयं त्वया कृता ।
तस्मात् त्वं सततं दुःखं प्रेत्य चेह च लप्स्यसे ।। 29

(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग 74)

"भय से जिसके है भीत सारा भुवन देवि,
पदाघात से है प्रकम्पित वसुन्धरा ।
वसुधा का वैभव भी चरणों पर जिसके है,
विजय–वैजयन्ती फहराती है व्योम मे ।
रघुकुल भूषण चक्रवर्ती सम्राट वही,
लुण्ठित है आज देवि पाँव पर तुम्हारे ।"

(कैकेयी का अन्तर्द्वंद पृष्ठ 49)

महारानी कैकेयी क धैर्यक सीमा अपार अछि। महाराज दशरथ क' एतेक विनतीक वादो ओ अपना निर्णय पर अडिग रहलीह । हुनकर तँ एकेटा चाह छल –

"किन्तु मै करूँगी वही, जिससे कल्याण होगा –
जन का मानवता का – भारत भूखण्ड का ।"

(कैकेयी का अन्तर्द्वंद पृष्ठ 50)

राम वन नहि जाथि एकरा लेल महाराज दशरथ, महारानी कैकेयीक चरण तक पकड़ि लेलन्हि यथा

इत्युक्त्वा श्रुपरीताक्षः पादयोर्निपपातह ।
कैकेयी प्रत्युवाचेदं सापि रक्तान्त लोचना ।। 29

(अध्यात्म रा॰ अ॰ का॰ सर्ग – 3)

एतेक सुनलाक वादो महारानी कैकेयी मौन रहलीह, समुद्र जकॉ शान्त रहलीह । की हुनका हृदय मे रामक प्रति वेदना नहि छलन्हि। की ओ इ सब अपना लेल वा भरत के लेल करैत छलीह । ओ तॅ ई सब ओही रामक लेल करैत छलीह । जकरा लेल माता कौशल्या, भरत आ समुचा अयोध्या तरपि रहल छल।

"शत्रु अथवा मित्र तो नही है तुम्हारा राम
पुत्र है तुम्हारा और पुत्र ही रहेगा माँ ।
अपना संतुलन किन्तु आज नहीं खो देना,
रहना गंभीर महासागर के तुल्य ही ।
माँगें धुलती है तुम तीन की ही किन्तु अम्ब !
कोटि–कोटि माँगों का सिंदूर बच जायगा
मानवता आज सांस तोड़ रही है अपनी,
इसकी रक्षा तो अब तुम्हारे ही हाथ है ।"
(कैकेयी का अन्तर्द्वंद पृष्ठ 21)

श्री उमेश जीक रचित उपरोक्त उक्तिक आधार पर मात्र राम कैकेयीक हृदय केर व्यथा देखि रहल छथि, सुनि रहल छथि आ ओ सांत्वना सेहो द' रहल छथि। हे माता हमरा वन गेला सँ महाराज दशरथ नहि रहताह आ एहि सँ अहाँ तीनू बहिन विधवा भ जायब। इ गप्प सत्य अछि मुदा जँ हम वन नहि जायब तँ हजारो बहिन विधवा भ' जयतीह। मानवता खतम भ' जायत। एकर रक्षा मात्र अहीक हाथ अछि। आ ते महारानी कैकेयी विवश छथि । सब सँ वेशी नुकसान तँ हुनकहि भेलन्हि अछि। सब तँ केवल रामक लेल तरपि रहल अछि मुदा माता कैकेयी तँ राम आ भरत दूनूक लेल तरपि रहल छथि। ओ सब किछु सहन क' रहल छथि, केवल रामक लेल, मानवताक लेल आ राष्ट्रक लेल। एकटा द्रष्टाक आ विधायक केर जे कर्त्तव्य होयबाक चाही, महारानी कैकेयी पूर्णतः ओकर पालन कयलन्हि अछि अपना मॉथ पर कलंकक मोटरी ल' क', सतमाय बनि क'।

4– कैकेयीक रणनीति

ओना तँ सब रामायण मे महारानी कैकेयीक पात्रता के बहुत महत्वाकांक्षी, ओछ आ निंदनीय देखाओल गेल अछि। जाहि कारणे सामाजिक परिवेश मे सेहो लोक कैकेयीक चरित्र पर आंगुर उठाबैत अछि आ केओ व्यक्ति अपना घर–परिवार मे बेटीक नाम कैकेयी वा मंथरा नहि राखैत अछि। जखन कि रावण आ मेघनादक घरवाली मंदोदरी आ सुलोचना कतेको स्त्रीगणक नाम अछि। जखन कि महारानी कैकेयीक द्वारा रचल वनवासक व्यूह सँ राम आ भरत दूनूक चरित्र जुड़ल अछि। जँ वनवास नहि होइत तँ राम कें के जानैत, भरत कँ के जानैत, लक्ष्मण कँ के जानैत । भारत मे कतेक लोक छथि जे दशरथक पिता के जानैत छथि। हुनकहि वंश मे लोक हरिश्चन्द्र के जानैत छथि, भागिरथ के जानैत छथि, किएक तँ ओ त्याग कयलन्हि। तहिना लोक राम आ भरत, लक्ष्मण के जानैत अछि, किएक तँ ओ निश्चरक नास कयलनि । मुदा एहि पूर्ण परिप्रेक्ष्य मे जँ सब सँ पैघ ककरहु योगदान अछि, तँ ओ अछि महारानी कैकेयी केर । मुदा हुनकर सब सँ पैघ दोष अछि जे ओ रामक सतमाय छलीह ।

महारानी कैकेयी कैकेय नरेश अश्वपतिक पुत्री आ युधाजित केर बहिन छलीह। अत्यन्त रूपमतीक संग धनुर्विद्या मे पारंगत आ कुशल रथ संचालिका सेहो छलीह। एक बेर ओ रणभूमि मे महाराज दशरथक प्राणक रक्षा कयने रहथि आ हुनकर ओहि कृत्य पर खुश भ' महाराज दशरथ हुनका दूटा वरदान देने छलथिन्ह।

राम चरित मानस के अनुसार, देवासुर संग्राम चलि रहल छल। महाराज दशरथ देवराज इन्द्रक परम मित्र छलाह। ओ सहायता क लेल महाराज दशरथ सँ आग्रह कयलन्हि। महाराज दशरथ धनुर्विधा में निपुण छलाह आ हुनका शब्द बेधी बाण मे महारत हासिल छलन्हि। देवराज इन्द्रक निमंत्रण पर महाराज दशरथ ओहि युद्ध मे गेलाह आ संग छलथिन्ह कुशल रथ संचालिका महारानी कैकेयी। युद्धक मध्य जखन महारज दशरथ युद्ध करबा मे व्यस्त छलाह, ओहि काल मे महारानी कैकेयी के आभास भेलन्हि जे रथ मे किछु गड़बड़ी अछि। रथ केर पहिया डोलि रहल अछि। ओ ध्यन सँ देखलन्हि, रथ केर धुरीक कील कतहु निकलि क' खसि पड़ल। आब ओकर पहिया निकलि रहल छल। महारानी कैकेयी जँ देखबा

मे विलंब करितथि तँ बड़ पैघ अनर्थ भ' सकैत छल। रथ उनटि सकैत छल। महाराज दशरथ आ महारानी कैकेयी मारल जा सकैत छलीह। देवराज ओ युद्ध हारि सकैत छलाह। महारनी कैकेयी बिना देरी कयने अपना हाथक कनगुरिया आंगुर ओहि कीलक स्थान पर लगा देलन्हि आ दोसर हाथ सँ रथ संचालन करए लगलीह। जखन युद्ध समाप्त भेल; तँ महाराज दशरथ केर ध्यान महारानी कैकेयी पर गेल ओ अकचका उठलाह आ पूछलन्हि, 'अहाँ की क' रहल छी ?'

महारानी कैकेयीक हाथ सँ शोणित बहि रहल छल। तथापि ओ हँसैत बजलीह, "रथ आ रथी दूनू क सुरक्षा क' भार सेहो सारथीये पर ने रहैत छैक। हम एक सारथीक कर्त्तव्य क' रहल छी ।" महाराज दशरथ के अचंभा लागि गेलन्हि । महारानी कैकेयीक हाथ सँ छर–छर शोणित बहि रहल छल, तथापि हुनकर मुँह कनेको मलीन नहि भेल। ओ सहज रूपे गप्प क' रहल छलीह। हुनकर इ व्यवहार देखि महाराज अति प्रसन्न भेलाह आ कहलथिन्ह – अहाँ के जे किछु मन मे हो, से दूटा वरदान हमरा सँ मांगि लीय। हम अहाँक एहि काज सँ अति प्रसन्न छी। आ महारानी कैकेयी सेहो सहज रूपे थाती राखि (कहिओ ल' लेब) देलन्हिं।

बाल्मिकि रामायणक अनुसार –

दक्षिण दिशा मे दण्डकारण्यक भीतर बैजयन्त नामक एकटा नगर छलैक । जाहिठाम शम्बर नामक एकटा दैत्य निवास करैत छल। ओ अपना ध्वजा मे ह्वेल माँछक प्रतीक लगौने छल। ओ अत्यन्त मायावी छलैक । सब देवता मिलिओ क' ओकर मुकाबला वा ओकरा पराजित नहि क' पबैत छलाह । एक बेर देवराज इन्द्रक संग ओकर लड़ाई भेल ।

तस्मिन महति संग्रामे पुरूषान क्षत–विक्षतान् ।
रात्रौ प्रसुप्तान घ्नन्तिस्म तरसापास्य राक्षसाः ।। 14
(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग 1)

अर्थात्तु ओहि युद्ध मे क्षत–विक्षत लोक राति मे जखन थाकि क' सूति रहैत छलैक। तखन ओ राक्षस ओकरा ओछाइन पर सँ घिचिक मारि क' खा' जाइत छलैक।

तत्रा करोन्महायुद्धं राजा दशरथ स्तदा ।
असुरैश्च महाबाहु शस्त्रैश्च शकलीकृतः ।। 15
(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग 1)

ओहि युद्ध मे देवराज इन्द्रक निमंत्रण पर महाराज दशरथ महारानी कैकेयीक संग गेल छलाह। ओहि असुरक बाण सँ महाराज दशरथक सम्पूर्ण देह जर्जर भ' गेल छलन्हि। हुनकर चेतना लुप्त भ' गेल छलन्हि। तखन महारानी कैकेयी जे सारथीक रूप मे रथ संचालन करैत छलीह, महाराज दशरथ के अत्यधिक दूर ल' गेलीह। महारानी कैकेयीक एहि कृत्य पर प्रसन्न भ' दूटा वरदान देने छलाह आ इहो कहलन्हि जे जखन अहाँ के आवश्यक बुझना जाय माँगि सकैत छी।

महाराज दशरथ के तीन टा रानी छलथिन्ह। मानैत तँ ओ सबकें छलथिन्ह, मुदा सबसँ वेशी महारानी कैकेयी के मानैत छलथिन्ह। एकर कारण मात्र कैकेयीक सुन्दरता नहि छलैक। एकर कारण छलैक महारानी कैकेयीक राजनीतिक सूझ–बूझ, साहस आ शौर्य । अयोध्याक राज काज मे सेहो महारानी कैकेयीक प्रमुख योगदान रहैत छलन्हि। बिना हुनका सँ विचारने कोनो राजनीतिक वा सामाजिक निर्णय नहि लेल जाइत छल। जकर प्रमाण राम चरित मानस मे अछि। रामक राज्याभिषेक मे महारानी कैकेयी सँ विचार–विमर्श नहि कयने रहथि, यथाः–

मैं सबु कीन्ह तोहि बिनु पूछे ।
तेहि तैं परेउ मनोरथ छूछे ।।
(राम चरित मानस)

लोक के एकर खराब अर्थ सेहो लागैत छलैक । महाराज दशरथ धर्म धुरंधर आ चक्रवर्ती राजा होइतहु महारानी कैकेयीक वशीभूत छथि। हुनका प्रेम पाश मे आशक्त छथि आ तँ ओ सब काज मे महारानी कैकेयी सँ विचार लैत छथि मुदा से गप्प सत्य नहि छल । सत्य सँ महाराज दशरथ नीक जकां अवगत छलाह। ओ रणभूमि मे महारानी कैकेयीक रण कौशल आ कुशलता पूर्वक रथ संचालन क संग उचित समय पर सही बुद्धिक उपयोग देखि चुकल छलाह। बुद्धिमान आ कुशल नीतिज्ञ सँ विचार लेब शास्त्रक उक्ति थीक।

जतए गुणीक सम्मान नहि मुर्खक हो सम्मान ।
नृप के अयश होइछ ततए, कहथि नीति विज्ञान ।।
(नीति शास्त्र)

बुद्धिमान आ कुशल नीतिज्ञ के सेहो डर के त्यागि राजा सँ उचित गप्प कहबाक साहस होयबाक चाही आ राजा के सेहो ओकरा सुनबाक, ओहि पर विचार करबाक चाही । नहि कि उत्तेजित भ' ओहि व्यक्ति के दण्ड देवाक चाही।

उचित गप्प वा विरोधक गप्प सुनला सँ लोक के अपन गलतीक आभास होइत छैक । आ तखन ओ अपना गलतीक सुधार क' सकैत अछि। यथा :–

निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुभाय ।।

(कबीर)

विभीषण महाराज की कयने छलाह । उचिते गप्प तँ रावण सँ बाजल छलाह आ रावण के हुनकर सलाह नीक नहि लागल । ओकरा लगलैक जे इ (विभीषण) विरोधी पक्षक बात क' रहल अछि। ओ ओहि पर विचार नहि केलक, चिन्तन नहि केलक। ओकर परिणाम की भेलैक से तँ अहाँ सब जनितहि छी। विभीषण महाराज सेहो कुशल नीतिज्ञ छलाह। ओ तँ भ्रातृ प्रेम, राष्ट्र प्रेम आ समाजक रक्षार्थ उचित गप्प बजलाह मुदा रावण के ओकर भाव विपरीत बुझना गेलैक ।

इतिहास मे तीन नीतिज्ञक चर्चा अछि यथा :– विभीषण महाराज, विदुर जी आ चाणक्यक। नीतिज्ञ जँ राजाक डर सँ उचित गप्प नहि बाजि प्रिय गप्प, जे राजा के नीक लागय, बाजथि तँ ओहि सँ राजा आ राज्यक हित नहि होइत अछि, यथा:–

सचिव बैद्य गुरू तीन जौं प्रिय बोलहि भय आस ।
राज, धर्म, तन तीन कर होई बेगही नास ।।

(राम चरित मानस)

आ सएह तँ रावणक संग भेल। रावण जखन सीता हरण केर योजना ल' क' मारीचक ओहिठाम गेल तँ मारीच सेहो ओकरा बहुत तरहें बुझौलक यथा:–

मुनि मख राखन गयउ कुमारा ।
बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा ।।
सत योजन आयउँ छन माही ।

तिन्ह सन बयरू किएँ भल नाही ।।

(राम चरित मानस)

मुदा रावण ओकर किछु नहि सुनलक । उनटे ओकरा मारबाक लेल तैयार भ' गेल । मारीच सेहो डरे चुप भ' गेल आ रामक शरण मे जायब उचित बुझलक; यथा:–

उभय भाँति देखेसि निज मरना ।
तब ताकसि रघुनायक शरणा ।।

तँ नीतिज्ञ वा विद्वानक गप्प पर विचार करक चाही। नहि की ओकरा बिना बिचारने छोड़ि दी आ इएह कारण छलैक महारानी कैकेयी के बिना पूछने अयोध्या मे कोनो नीति गत निर्णय नहि लेल जाइत छलैक । कौखन दुश्मनो के दुश्मन ओकरा भ्रमित करबाक लेल नीक गप्प कहि दैत अछि। जाहि सँ ओकरा पर विश्वास कयल जा सकैत अछि, यथा :–

जाई पवन सुत नायऊ माथा ।
लगा सो कहन राम गुन–गाथा ।।
होत महा रनु रावनु रामहि ।
जितिहहि राम न संसय या महि ।।

(राम चरित मानस)

जखन श्री हनुमान जी महाराज संजीवन बुटी लयबाक लेल जा रहल छलाह तँ हुनका भ्रमित करबाक लेल कालनेमि उपरोक्त पंक्ति सुनौने रहए। जाहि सँ पहिने तँ श्रीहनुमानजी महाराज भ्रमित भ' गेलाह मुदा बाद मे ओ ओकरा मारि क' आगु बढ़लाह।

नीति कहैत अछि जे उद्देश्य के गुप्त रखबाक चाही। तैखन व्यक्ति अपन असली उद्देश्य के पूर्ण क' सकैत अछि।

जखन श्री हनुमान जी महाराज वन मे श्रीराम के भेटैत छथि आ पूछैत छथि –

कठिन भूमि कोमल पद गामी ।
कवन हेतु बिचरहु वन स्वामी ।।

(मानस)

तँ श्रीराम उत्तर दैत छथि :–

कोसलेस दशरथ के जाए ।
हम पितु बचन मानि वन आए ।।

इहाँ हरी निसिचर बैदेही ।
बिप्र फिरहि हम खोजत तेही ।।

श्रीराम सेहो श्री हनुमान जी पर असली उद्देश्य प्रकट नहि कयलन्हि। इएह कूट नीति भेलैक। एकरहि प्रतिपादित महारानी कैकेयी कयने छथि । हुनकर राजनीतिक दूरदर्शिता आ रणनीति अद्भुत छल ।

5– महारानी कैकेयीक रामक प्रति स्नेह

कैकेयी अपन विवाह सँ पूर्व कयल गेल शर्त्त के बिसरल नहि छलीह। ओहि शर्त्तक अनुसार अयोध्याक राजगद्दी केर अधिकारी मात्र भरत छलाह मुदा राम सँ ओ एतेक प्रेम करैत छलीह, जकर वर्णन नहि । आ तैं हुनका राम आ भरत मे कोनो फर्क नहि बुझाइत छलन्हि । यथा :–

जौं विधि जनमु देई करि छोहु ।
होहुँ राम सिय पूत पुतोहु ।।
प्राण ते अधिक राम प्रिय मोरे ।
तिन्ह के तिलक छोभु कस तोरे ।।

(मानस)

महारानी कैकेयी मंथरा के बुझा रहल छथि । राम हमरा भरत सँ वेशी प्रिय छथि आ हुनका राज्य तिलक सँ तोरा किएक क्षोभ भ' रहल छौक। राम महारानी कैकेयी के एतेक प्रिय छलथिन्ह जे जखन मंथराक मुँहे महारानी कैकेयी सुनलन्हि, काल्हि रामक राज्याभिषेक होयत; तँ अपन सब सँ कीमती सोनाक हार गरदानि सँ उतारि मंथरा कँ द' देलन्हि आ बजलीह जे पुनः एहि तरहक गप्प कुटिचालि हमरा लग जुनि बजिहें । यथा:–

पुनि असि कबहुँ कहसि घरफोरी ।
तब धरि जीभ कढ़ाबउँ तोरी ।।
काने, खोरे, कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।
अति विसेषि पुनी चेरि कहि भरत मातु मुसुकानि ।।

(मानस)

बाल्मिकी रामायणक अनुसार :–

अतीव सा तु संतुष्टा कैकेयी विस्मयान्विता ।
दिव्यमा भरणं तस्यै कुब्जायै प्रददौ शुभम् ।। 32

इदं तु मंथरे मह्यमाख्यातं परमं प्रियम् ।
एतन्मे प्रियमाख्यातं किंवा भूयः करोमि ते ।। 34
रामे वा भरते वाहं विशेष नोप लक्षये ।
तस्मात् तुष्टास्मि यद् राजा रामं राज्येऽभिषेक्ष्यति ।। 35

(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग – 7)

अर्थातु रामक राज्याभिषेक क' समाचार सुनि महारानी कैकेयी अत्यन्त हर्षित भेलीह आ कूब्जा के दिव्य आभूषण प्रदान कयलन्हि आ बजलीह मंथरा तू हमरा सबसँ प्रिय समाचार सुनौने छेंह । एकरा लेल हम तोहर कोन उपकार करिऔक । हमरा राम आ भरत मे किछु फर्क नहि बुझना जाइत अछि। तैं रामक राज्याभिषेक सँ हम अति प्रसन्न छी।

यथा वै भरतो मान्यस्तथा भूयोऽपि राघवः ।
कौसल्यातोऽतिरिक्तं च मम शुश्रुषते बहुः ।। 18
राज्य यदि हि रामस्य भरतस्यापि तत् तदा ।
मन्यतेहि यथाऽऽत्मानं यथा भ्रातृंस्तु राघवः ।। 19

(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग – 8)

अर्थातु हमरा लेल जतेक आदर केर पात्र भरत छथि ओहि सँ वेशी आदर के पात्र राम छथि। किएक तँ ओ कौशल्या सँ वेशी हमरा सँ स्नेह राखैत छथि । जँ राज्य राम के भेटि रहल अछि तँ हमरा बुझने ओ भरतहि के भेटि रहल अछि। श्री राम अपना सब भाय के सेहो समान रूप सँ मानैत छथि ।

तस्यै दिव्यं ददौ स्वर्ण नूपूरं रत्न भूषितम् ।
हर्ष स्थाने किमितिमे कथ्यते भयमागतम् ।। 55

(आ॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग – 2)

मोटा–मोटी वनवास सँ पूर्व सब रामायण मे देखाओल गेल अछि जे महारानी कैकेयी राम सँ कतेक प्रेम करैत छलीह ।

जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यह दिनकर कुल रीति सुहाई ।।
राम–तिलक जँ साँचेहु काली । देउँ माँग मन भावत आली ।।
कौशल्या सम सब महतारी । रामहि सहज सुभाँय पिआरी ।।
मो पर करहि सनेहु विशेषी । मै करि प्रीत परीक्षा देखी ।।

(राम चरित मानस)

महारानी कैकेयीक स्पष्ट अवधारणा अछि जे जेठ अर्थातु रामक राज्याभिषेक होयब सही अछि आ इएह तँ दिनकर कुल केर रीति अछि। राम सब तरहें एकर

योग्य छथि । ओ सब माता सँ अधिक प्रेम करैत छथि। आ हमरा सँ अति विशेष प्रेम करैत छथि ।

महारानी कैकेयी इहो कहि रहलीह अछि :–

तुम अपराध जोग नहि ताता ।
जननी जनक बंधु सुख दाता ।।

(मानस)

श्री उमेशजीक अनुसार :–

"यौव राज्य–प्राप्त होगा कल ही तो तुझे राम ।
शंकर कृपा से यह शुभ दिन आया है ।
पृथ्वी पर मुझसे है और कौन भाग्यवती ?
अपनी साधना को कल सिद्ध लाभ होगा।
सीता को दूँगी उपहार मे यह कर्ण–फूल,
शीश – फूल , कंठहार , कुंडल , केयूर भी ।
दूंगी कल गौएँ शत – शत ब्राह्मणों को दान "
सेवक सेविकाओं को वस्त्राभरण दूंगी ।

(कैकेयी का अंतर्द्वंद्व पृष्ठ – 14, 15)

महारानी कैकेयी रामक राज्याभिषेक सँ कतेक प्रसन्न छथि। एकर वर्णन नहि कयल जा सकैत अछि। एहि गप्पक तँ प्रायः सब रामायण मे उल्लेख अछि। जे व्यक्ति एतेक ककरहु सँ प्रेम करत ओ अचानक अपना स्वार्थक कारणे बदलि जायत, इ ठीक बुझना नहि जाइत अछि। कोनो ने कोनो एकर गुप्त रहस्य होएतैक अवश्य ।

6– रामक स्नेह

श्री राम माता कैकेयी सँ बहुत अधिक प्रेम करैत छलाह। ओना तँ ओ प्रेमक मूर्तिये छलाह आ सब सँ प्रेम करैत छलाह। तथापि माता कैकेयी सँ विशेष रूप सँ । यथा मानस मे सेहो उद्धृत अछिः–

रामहि केवल प्रेम पिआरा ।
जानि लेहु सो जाननि हारा ।।

महारानी कैकेयीक संबंध मे स्वयं श्रीराम सीता जी सँ कहैत छथि, हे सीता, महारानी कैकेयी हमरा पर सतत प्रसन्न रहैत छथि। महाराज के सतत प्रसन्न राखैत छथि। हुनका नीक बाट देखबैत छथिन्ह आ सतत हमर उपकारे करैत छथि ।

जखन श्री राम आ सीता वन जयबाक लेल निर्णय कयलन्हि तँ ओ सब विचार करए लगलाह जे इ काज कोना सफल भ सकैत अछि। महाराज दशरथ तँ हुनका कोनहु स्थिति मे एको क्षण क लेल छोड़ि नहि सकैत छथि । तें हुनका सँ एहि संबंध मे कोनहु अपेक्षा राखब व्यर्थ अछि। तखन तँ माता सब बचलीह । माता मे एकहिटा माता कैकेयी हमर काज क सकैत छथि, जें हुनका निहोरा कयल जाय आ , कहल जाय जे एहि सँ हमर कल्याण होयत । ओना तँ माता कैकेयी सेहो एहि काज मे आना–कानी अवश्य करतीह मुदा रामक लेल आ रामक कल्याणक नाम पर ओ किछु क सकैत छथि वा हुनका सँ किछु कराओल जा सकैत अछि। अन्य माता ओतेक साहसी नहि छथि, जतेक माता कैकेयी छथि।

श्री राम माता कैकेयी सँ एतेक स्नेह करैत छलाह जे वनवासक बाद जँ हुनका ककरहु चिन्ता छल तँ ओ छलीह माता कैकेयी । श्रीराम सोचि रहल छथि जे माता कैकेयी तँ निर्दोष छथि मुदा अयोध्यावासी हुनका हेय दृष्टिये देखैत हेथीन्ह । इ सोचि हुनकर चिंता आर बढ़ि जाइत छलन्हि। जखन श्रीभरत जी चित्रकूट मे श्रीराम सँ भेंट करैत छथि,तँ श्रीराम पूछैत छथिन्ह – कहु प्रजावती कौशल्या, सुमित्रा आ आर्यादेवी कैकेयी तँ प्रसन्न छथि । हुनका कोनहु तरहक कष्ट तँ नहि भ रहल छन्हि। एहिठाम आर्यादेवीक संबोधन अन्य माताक लेल नहि आयल अछि। केवल माता कैकेयी लेल श्रद्धा सँ एहि शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि। किएक तँ राम

सेहो सभक शुभ चिन्तक छथि।

"सर्वस्य लोकस्य हिते विशिष्टः"

आ दूनूक जीवनक तँ एकेटा पवित्र उद्देश्य छल । जखन श्री रामक समक्ष भरत जी माता कैकेयीक निंदा कयलन्हि तँ श्रीराम भरत जी पर बिगरि उठलाह आ बजलाह–हे भरत! अहाँ तँ ज्ञानी छी, आई किएक अबोध बच्चा जकाँ गप्प क रहल छी। माता कैकेयी निंदा करबाक योग्य नहि छथि। ओ तँ परम पूजनीय छथि।

सा राज्य फलम प्राप्य विधवा शोक कर्शिता ।
पतिष्यति महाघोरे नरके जननी मम ।। 07

(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग–101)

तखन श्रीराम कहैत छथि, – हे तात् अहाँ निर्दोष छी। हम अहाँक भीतर कोनहु दोष नहि देखैत छी। अज्ञान वश अहाँ के अपना मायक निंदा नहि करक चाही। यथाः–

न दोषं त्वयि पश्यामि सूक्ष्ममप्यरि सूदन ।
न चापि जननी बाल्यात् त्वं विगर्हितुमर्हसि ।। 17

(बा॰ रा॰ अ॰ का॰ सर्ग–101)

श्रीराम आ महारानी कैकेयीक बीच कतेक पवित्र भाव छल इ ओहिकाल व्यक्त भेल, जखन राम–रावण केर युद्ध समाप्त भ' गेल । रावण मारल गेल आ देवता लोकनि श्रीरामक स्तुति कयलन्हि। ओहि काल महाराज दशरथ सेहो स्वर्ग सँ आबि रामक स्तुति कयलन्हि। राम महाराज दशरथ सँ कहलन्हि, "हे पिताजी महाराज ! अहाँ माता कैकेयी आ भैया भरत पर कृपा करिऔन। अहाँक वचन " हम पुत्र सहित अहाँक त्याग क' रहल छी," इ शाप माता कैकेयी आ भैया भरत पर नहि लगबाक चाही।

जखन श्रीराम वनवास सँ आपस अयलाह तँ सब सँ पहिने माता कैकेयीक भेंट करबाक लेल हुनकहि भवन गेलाह । यथाः–

प्रभु जानी कैकेई लजानी । प्रथम तासु गृह गये भवानी ।।
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा। पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा।।

(मानस)

अर्थातु श्रीराम के इ आभास भ' गेलन्हि, जे माता कैकेयी लाज सँ

हमरा लग नहि अयलीह। हुनकर बहुत अधिक अपमान भेल। लोक हुनका स्वार्थी कहि कलंक लगौलक जे अपना पुत्रक सुखक लेल राम के वन द देलक। श्रीराम माता कैकेयीक मनक भाव बुझि सब सँ पहिने हुनकहि भेट कयलन्हि आ बहुत तरहें बुझौलन्हि।

एहि सम्बन्ध में किछु टीकाकारक उक्ति अछि जे चूकि वन गमन महारानी कैकेयीक महल सँ प्रारंभ भेल छल। तेँ ओकर अंत सेहो हुनकहि महल सँ होयबाक चाही। तेँ श्रीराम महारानी कैकेयीक महल मे गेलाह मुदा सब परिवेश के देखैत कहल जा सकैत अछि, जे काजक शुरूआत माता कैकेयीक आशीर्वाद सँ भेल ते काजक समाप्ति पर माता कैकेयीक आशीर्वाद आवश्यक छल आ तेँ हुनका महल मे गेलाह। श्रीराम माता कैकेयी के कहैत छथि – " हे माता अहींक कृपा आ कूटनीति सँ हम रावण के मारि सकलहु आ अहाँक पुत्रक नाम तीनू लोक में उजागर भेल ।"

वन भुवि तनुमात्र त्राणमाज्ञापितं मे
सकल भुवन भारः स्थापितो वत्सं मूर्धनि ।
तदिह सुकरतायामा व्योस्तं किंतामां मयि
पतति गरीयानम्ब ते पक्षपातः ।।

(मानस पियूष उत्तर काण्ड)

अर्थातु अहाँ मात्र हमरा अरण्य मे अपन देहक रक्षाक भार देल मुदा भरत केर मॉथ पर संपूर्ण पृथ्वीक रक्षाक भार द' क' वेशी कष्ट तँ भरत के देल। हमर काज तँ आसान छल।

श्रीराम कहैत छथि, 'हे माता अहाँ कनेको दुःख वा शोक नहि करू, विषाद नहि करू। इ तँ हमरहि मनक गप्प भेल। हम तँ चाहैत छलहु जे वन जा' क' भूभार उतारी। हमही प्रेरित क' अहाँ सँ वर मँगवौने छलहु।'

श्रीराम कहैत छथि, हे धर्मज्ञ भरत अहाँ हमरा लेल पूज्य पिता महाराज दशरथ के माता कैकेयीक ऋण सँ मुक्त करबाउ। हुनका नरक मे जयबा सँ बचाउ आ माता कैकेयी के आनन्द के सेहो बढ़ाबू । यथाः–

ऋणान्मोचय राजानं मत्कृते भरत प्रभुम ।

पितरं त्राहि धर्मज्ञ मातरं चाभिनन्दय ।। 10

(बा. रा. अ. का. सर्ग – 107)

श्रीराम जखन भरत जी के आपस अयोध्या पठबैत छथि तँ हुनका हृदय सँ लगाक कहैत छथि, हे भरत ! हम अपन आ सीताक शप्पत द'क' कहैत छी जे माता कैकेयीक रक्षा नीक जकाँ करब। हुनका प्रति कौखन क्रोध नहि करब आ इ कहैत श्रीराम के आँखि छलकि गेल। यथा :–

मया च सीतया चैव शप्तोऽसिरघुनन्दन।

इत्युक्त्वा श्रुपरीताक्षो भ्रातरं विससर्जह ।। 28

(बा. रा. अ. का. सर्ग – 112)

जखन श्रीराम रावण के युद्ध मे परास्त क' देलन्हि तँ रावणक अन्तिम क्षण मे रावण सँ राजनीति सिखबाक लेल लक्षमण के पठबैत छथि। रावण श्रीराम सँ प्रश्न करैत अछि, हे राम हम आ अहाँ तँ एके राशिक छी, विद्वान छी, सब अस्त्र–शस्त्रक ज्ञाता छी, हम ब्राह्मण छी आ अहाँ क्षत्रीय। तखन हमरा मे की कमी अछि, जाहि कारणे हमर इ हाल भेल अछि ?

राम उत्तर देलन्हि, ''चरित्रक। हमरा लग चरित्र अछि आ अहाँ लग ओकर अभाव अछि।

रावणक पूछलक, '' इ शिक्षा अहाँ के कतय सँ भेटल ?''

राम बजलाह, '' माता कैकेयी सँ ।''

श्री उमेशजीक अनुसार :–

' धन्य, धन्य माता पर कामना न इनकी है

चाहिए मुझे तो किन्तु '' वरदान आपका ।''

(कैकेयी का अंतर्द्वंद्व, पृष्ठ – 15)

मुझको है गर्व पाकर तुझ जैसी माता को ।

प्यार भी विशेष तेरा मुझपर ही है माँ ।।

(कैकेयी का अंतर्द्वंद्व, पृष्ठ – 17)

आाप जानते ही हैं, भरत से न कटुता है,

और छोटी माता भी हमारी सदा पूज्य है ।

दोष नहीं कोई दे, सुधन्या छोटी माता जी को,

वह क्या वियोग सह सकती है राम का ?

पूज्यवर पिताजी तो शंकर स्वरुप ही हैं,

भावी प्रवल है जो रोके नहीं रुकती है,

धैर्य धरे आप और पिता को धराये धैर्य,

माता कैकेयी पर भी आँच नहीं आने दे ।।

(कैकेयी का अंतर्द्वंद्व, पृष्ठ – 65–66)

उपरोक्त तथ्य सँ स्पष्ठ बुझा रहल अछि जे राम महारानी कैकेयी कँ कतेक चाहैत छलाह। हुनका सँ कतैक प्रेम करैत छलाह।

कैकेयी जाँलों जियती रही ।

ताँलों बात मातु सँ मुँह भरि भरत न भूलि कही ।।

मानी राम अधिक जननी तँ जननिह गँस न गही ।

(गीताबली पृष्ठ – 377)

अर्थातु माता कैकेयी यावत् जिवैत रहलीह, भरत कहिओ हुनका सँ भरि मुँह गप्प नहि कयलनि आ ने माय कहि क' सोर कयलनि मुदा श्रीराम हुनका सब माता सँ अधिक स्नेह दैत छलाह आ महारानी कौशल्या सेहो हुनका सँ मन मोटाव नहि राखैत छलीह।

7– गुप्त मंत्रणा

श्री राम के वनवास भेटल आ महारानी कैकेयीक माँथ पर कलंकक टीका लागि गेल। सतमाय सतौतक सुख कोना देखि सकैत अछि, सतमाय सतौतक लेल की की क' सकैत अछि, तकरा देखनिहार सुननिहार केओ नहि अछि । एहि मे श्री राम आ माता कैकेयीक बीच गुप्त मंत्रणा भेल अछि। हलांकि कोनो रामायण मे एकर स्पष्ट संकेत नहि अछि। मुदा वास्तविकता इ अछि जे राजनीति मे सही स्थिति सँ विपक्षी अवगत नहि हो, एकरा लेल गुप्त मंत्रणाक उल्लेख नहि कयल जाइत अछि। ओना तँ महारानी कैकेयी आ महाराज दशरथ एहि तथ्य सँ अवगत छलाह जे रामक जन्म किएक भेल अछि । यथा :–

राम जनम जग मंगल हेतु ।
सत्य संधि पालक श्रुति सेतु ।।

(राम चरित मानस)

तेषां निग्रहणे शक्तः स्वयं च कुशिकात्मजः ।
तव पु.त्र हितार्थाय त्वामुपेत्याभियाचते ।। 21
एवं वीर्यो महातेजा विश्वामित्रो महायशाः
न राम गमने राजन संशयं गन्तुमर्हसि ।। 20

(बा॰ रा॰ बा॰का॰ सर्ग – 21)

मुदा श्रीरामक मायाक कारणे सब किछु जनैतो अबुझ छलाह । जखन महामुनि विश्वामित्र महाराज दशरथ सँ रामक याचना करैत छथि तँ महाराज दशरथ विश्वामित्र के राम के देवा मे अपन असमर्थता व्यक्त करैत छथि। तखन महर्षि वशिष्ठ हुनका कहैत छथीन्ह – राजन महर्षि विश्वामित्र बहुत प्रतापी आ प्रभावशाली ऋषि छथि। हिनका सँ भूत, भविष्य आ वर्त्तमानक कोनो गप्प चोरायल नहि अछि। इ त्रिकालदर्शी छथि। ओना तँ ओहि राक्षस के (जकरा लेल राम आ लक्ष्मण मॉगैत छथि) मारबा मे ओ स्वयं सक्ष्म छथि मुदा ओ श्रेय राम आ लक्ष्मण के देमए चाहैत छथि। हुनकर कल्याण करए चाहैत छथि। एहि सँ महाराज दशरथ के बुझक चाही जे श्रीराम के छथि, मुदा हुनका आँखि पर पुत्र मोहक पट्टी लागल छल । ओना तँ त्रिकालदर्शी महर्षि वशिष्ट सेहो छलाह। ओ जनैत छलाह जे श्रीरामक अवतार किएक भेल अछि मुदा द्रष्टा कोनो काज अपने सँ नहि करैत अछि। ओ सही नायक के ताकैत अछि। ओकर प्रतीक्षा करैत अछि। आ दोसर पात्र

वा नायक सँ ओ काज कराबैत अछि ।

देव कार्यार्थ सिद्धयर्थ भक्तानां भक्ति सिद्धये ।
रावणस्य बधार्थाय जातं जानामि राघव ।। 24

(अध्यात्म रा॰ अ॰ का॰ सर्ग–2)

अर्थातु जखन महर्षि वशिष्ठ महाराज दशरथ क' आज्ञा सँ श्रीराम आ जानकी के राज्याभिषेक लेल उपवास आ नियम पूर्वक रहबाक लेल आदेश देमए गेल छथि तँ ओ कहैत छथि ; हे राम हम जनैत छी जे अहाँ देवताक कार्यक सिद्धिक लेल आ दुष्ट रावणक बधक लेल अवतार नेने छी मुदा हम एहि रहस्य के गुप्ते राखब । प्रकट नहि करब ।

सब सँ प्रथम तँ गुप्त मंत्रणाक कोनो इतिहास नहि होइत छैक। ओकर सविस्तार कतहु उल्लेख नहि होइत अछि। ओकरा संबंध मे मात्र अटकल लगाओल जा सकैत अछि आ ओहि अटकलक आधार होइत अछि दूनू पक्षक बीचक व्यवहार। यदि दू पक्षक बीच कोनो तरहक विवाद होइत अछि आ ओ विवाद जँ स्वाभाविक अछि तँ दूनूक व्यवहार मे खटास आबि जाइत अछि मुदा जँ ओहि मे कोनो तरहक गुप्त मंत्रणा रहैत अछि तँ कतहु ने कतहु व्यवहार मे नरमी अवश्य रहैत अछि। जँ महारानी कैकेयी राम कें ईर्ष्यावश वनवास देने रहितथि तँ भरत केर संग रामक भेंट करबालेल चित्रकूट किएक जइतथि आ श्रीराम सब माता सँ पहिने माता कैकेयी सँ किएक भेंट करितथि। ओ बेर–बेर भरत सँ किएक कहितथि जे माता कैकेयी पर क्रोध नहि करू, ओ निर्दोष छथि। इ तथ्य आ परिवेश इ संदेश द' रहल अछि जे राम वनवास, राम आ माता कैकेयीक गुप्त मंत्रणाक परिणाम छल।

एहि संबंध मे हम आजुक परिपेक्ष्य मे घटल किछु घटनाक उदाहरण द' रहल छी । सब सँ पहिने तत्काल प्रधानमंत्री स्व॰ राजीव गाँधी आ स्वीडनक व्यापारीक संग की गुप्त वार्त्ता भेल छल आइ धरि केओ ओकरा स्पष्ट नहि क' सकल। जे विश्वनाथ प्रताप सिंह बोफोर्सक जहाज पर चढ़ि प्रधानमंत्रीक कार्यालय धरि पहुँचलाह; ओहो आई धरि एकर खुलासा नहि कयलन्हि। एहि सँ स्पष्ट बुझना जाइत अछि जे ओ समझौता वा वार्त्ता राष्ट्र हित में छल। अन्यथा विपक्षी लोकनि चुप किएक छथि। मुदा ओहि समय मे राजीव गाँधीक आलोचना भेल आ ओ किछु नहि बजलाह । बाजब केर मतलब होइत एकर खुलासा करब

जे राष्ट्र हित मे नहि छलैक। तैं ओ विपक्षीक ललकार सुनिओक राष्ट्र हित वा देश हित मे चुप रहलाह । की : ओ विवशता महारानी कैकेयीक संगे नहि भ सकैत छल जे स्व॰ राजीव गाँधीक संग छलैक । की ओकर आलेख कोना इतिहास मे होयत ? आब बला देशवासी काल्हि एकरा संबंध मे की बुझत ।

दोसर अहाँ सब जनैत छी, बंगालक चुनाव कार्य सँ श्री के॰ जे॰ राव कें हटाओल गेल । ओ आदेश चुनाव आयोगक छलैक। मुदा चुनाव आयोग के ओकर की आवश्यकता छलैक। ओकरा पाछाँ केकर हाथ छलैक। श्री राव केर चुनाव कार्यप्रणाली सँ ओहिठामक बामपंथी सरकार संतुष्ट नहि छल। ओकर कुर्सी ससरि रहल छलैक। ओकर पाशा पलटि रहल छलैक। ओकर दवाब कांग्रेस अध्यक्षा पर बढ.ल आ हुनकहि इशारा पर चुनाव आयोगक इ आदेश भेल। भ' सकैत अछि जे इ गप्प सत्य नहि हो, मुदा घटना क्रम आ परिपेक्ष्य एहि पर विचार करबाक लेल विवश अछि जे इ सच भ' सकैत अछि मुदा काल्हुक पीढी जँ एकर इतिहास ताकत तँ कतए सँ भेटत। ठीक ओहिना तथ्य आ परिपेक्ष्य सँ इ बुझना जाइत अछि जे श्रीराम आ माता कैकेयीक बीच गुप्त मंत्रणा अवश्य भेल होएतैक। अन्यथा जे कैकेयी रामक राज्याभिषेक सुनेक एतेक खुश भेलीह, जे मंथरा के सब सँ कीमती सोनाक हार द' देलन्हि आ ओकरा पर बिगड़ि क' ओकरा घरफोरी तक कहि देलन्हि, यथा :–

पुनि असि कबहु कहसि घरफोरी ।
तब धरि जीभ कढ़ाबऊ तोरी ।।

(राम चरित मानस)

ओ तँ मंथरा सँ कहैत छथि, राजा तँ जेठ भाय होइत अछि आ छोट भाय ओकर सेवक आ इएह तँ दिनकर कुल केर रिति अछि एहि मे तोरा अनुचित की बुझा रहल छौक । यथा :–

जेठ स्वामि सेवक लघु भाई ।
यह दिनकर कुल रीति सुहाई ।।

(राम चरित मानस)

जे महारानी कैकेयी देवासुर संग्राम मे महाराज दशरथ केर प्राणक रक्षा क' सकैत छथि। ओ हुनकर प्राण कोना ल' सकैत छथि । ओ एकटा दासीवा नौडीक कहला सँ अपन विचार कोना बदलि देतीह । आ जँ एहेन भेल तँ एकर एकहि टा कारण भ' सकैत अछि, रामक दुराग्रह वा राष्ट्र

कल्याण । श्री उमेश जी द्वारा रचित "कैकेयी का अंतर्द्वंद" नाटक काव्य दृश्य 3 के आधार पर श्री राम आ महारानी कैकेयी केर बीच गुप्त मंत्रणा भेल छलन्हि। पृष्ठ 14, 15 के अनुसार :–

एक दिन राम किछु उदास छलाह। माता कैकेयी के रामक उदासी नहि देखल गेलन्हि आ ओ उदासीक कारण पूछि देलथिन्ह। राम अपना युक्ति आ बाक पटुता सँ हुनका वचन मानबाक लेल विवश क' दैत छथि आ माता कैकेयी हुनका वचन दैत छथि। जहिना महारानी कैकेयी महाराज दशरथ सँ वचन नेने छलीह, तहिना माता कैकेयी सँ श्रीराम वचन लेलन्हि। माता कैकेयी वचन देवाक क्रम मे कहैत छथि "देवा सँ ओएह हटैत अछि जे कायर कुबुद्धि आ नीच होइत अछि।" रघुकुल केर नारी सेहो वर देवा मे कौखन पाछाँ नहि भ' सकैत अछि। तद्नुसार राम हुनका सँ आग्रह करैत छथि जे अहाँ महाराज सँ वरदान माँगि लीअ । महारानी कैकेयीक उत्तर छलन्हि ; की वरदान माँगक चाही "। राम कहैत छथि; रामक राज्याभिषेक तँ अवश्य होयत मुदा चौदह वर्षक बाद।

कैकेयी बजलीह , ' एतेक दिन हमर राम की करताह '' ?

राम, '' एतेक दिन राम वनवास मे जयताह । ओहिठाम मुनि :– महात्मा सँ शिक्षा ग्रहण करताह । राक्षस क' संहार क पृथ्वीक भार उतारताह, आ देवता लोकनि जे रावण केर ओहिठाम बंदी बनल छथि; हुनका छोड़एताह । रावणक नाम सुनैत महारानी कैकेयी वेहोश भ' गेलीह । जखन होश भेलन्हि तँ बजलीह;'' राम इ काज हमरा सँ नहि भ' सकैत अछि'' । राम बजलाह, "हम जनैत छलहु। महारानी कैकेयी के राम पर जे स्नेह अछि, ओ मात्र देखाबा अछि। हम तँ सुनैत छलहु, महारानी कैकेयी परम चतुर; महादानी; वीरांगना आ दृढ़–प्रतिज्ञ छथि, मुदा सबटा सुनैत छलहु । आई देखलहु जे महारानी कैकेयी सनक कायर ,स्वार्थी समूचा अयोध्या मे दोसर केओ नहि अछि।" नहि राम–––हम कायर नहि छी, मुदा ''–––कैकेयी बजलीह ।

राम , '' तखन वचन द' क' पाछाँ किएक हटैत छी। ''

कैकेयी, ''राम! एहेन गप्प नहि छैक । अहाँ तँ हमरा असमंजस मे द' देलहु । एहि सँ समूचा अयोध्या मे हाहाकार भ' जायत । महाराज श्री अपन प्राणक रक्षा नहि क' सकताह। हुनकर प्राण तँ अहीं मे बसल अछि। आ हमरा माँथ पर

एतेक पैघ कलंक ——— ।"

राम ,– " की अहाँ रामक लेल एतबहु नहि क' सकैत छी ? "

कैकेयी ,–" हँ ! क' तँ सकैत छी, मुदा महाराज "———

राम ,– " हे माता ! महाराजेक लेल तँ हमरा जल्दी वन जयबाक अछि। "

महारानी कैकेयी , " सँ किएक ? "

राम , " महाराजक अन्तिम समय आबि गेलन्हि। हुनका तापस केर श्राप भोगबाक छन्हि। जँ हम वन नहि जायब तँ तापस केर श्राप झूठ भ' जयतैक आ हमरा नाम पर कलंक लागि जायत। कोनहु भक्तक मान मर्दन होमय, इ हमरा लेल असह्य अछि' दोसर गप्प रावणक अत्याचार बढ़ि रहल अछि। नित्य नारीक अपमान भ'। रहल अछि। देवता लोकनि त्राहि–त्राहि क रहलाह अछि। तैं ओकर नास आवश्यक अछि आ से बिना वनवासे संभव नहि अछि। "

महारानी कैकेयी , " इ काज तँ अहाँ अयोध्या सँ सेना ल' जा क' सेहो क' सकैत छी। एकरा लेल वनक की प्रयोजन ? "

राम , " प्रयोजन अछि । माता ! अहाँ तँ अपनहि कूटनीति मे निपुण छी मुदा स्वार्थ वश इ गप्प बाजि रहल छी। अहाँ राम के पौती मे राखए चाहैत छी। पौती मे रखला सँ राम के के चिन्हत; ओकर विकास कोना होयत । जँ हम एहिठाम सँ युद्धक संचालन करब तँ अयोध्या नष्ट–भ्रष्ट भ जायत । रावण कोनहु साधारण व्यक्तिक हाथे नहि मरत । ओकरा लेल आवश्यक छैक, जे व्यक्ति चौदह वर्ष धरि वन मे रहत ओएह ओकरा मारि सकैत अछि। ई ब्रह्मा सँ ओकरा वरदान प्राप्त छैक। "

महारानी कैकेयी , " राम ! इ हमरा सँ नहि भ सकैत अछि। जाहि राम के हम भरतहु सँ वेशी चाहि रहल छी, ओकरा वनवास देव ? की एहि सँ भरत के खुशी होयतन्हि; नहि कथमपि नहि। हम जनैत छी जे हमर विवाह अही शर्त्त पर महाराज दशरथ सँ भेल छल, जे हमरहि पुत्र अयोध्याक राज्यगद्दी पर बैसत । मुदा हमरा लेल राम आ भरत मे कोनहु फर्क नहि अछि। बल्कि जँ राम राजा होइत छथि तँ हमरा अत्यन्त हर्ष होयत । "

राम , "तखन तँ हमर काज नहि होयत ?"

महारानी कैकेयी , " नहि,राम अहाँ दोसर किछु माँगू हम अवश्य द' देब मुदा इ काज हमरा सँ नहि होयत । महाराजक निर्णय पर कुठाराघात, महाराज टुटि जयताह; प्राणक रक्षा नहि क' सकताह । भरत हमरा सँ छुटि जायत । अयोध्याक लोक हमरा सँ मुँह फेरि लेत आ सतमायक नाम पर कलंकक टीका लागत ओकरा केओ नहि धो सकत । "

राम – माँ तँ बेटाक लेल की, की ने करैत अछि। अहाँ हमरा कल्याणक लेल एतबहु नहि क' सकैत छी। की अहाँ ओएह माता कैकेयी छी, जे देवासुर संग्राम मे महाराज दशरथक प्राण बचौने छलहु ? हमरा तँ संदेह अछि ? रामक माता एतेक कमजोर नहि भ' सकैत छथि । श्री उमेशजीक अनुसार रामक गप्प सुनि माता कैकेयी अत्यन्त बिचलित भ' उठलीह आ बजलीह –

"इससे अच्छा हे राम ! बन तू परशुराम
लेकर कुठार शीश काट ले कैकेयी का ।"
"और सोचो भरत भी क्या होगा प्रसन्न राम !
तेरे साथ–साथ ही भरत छूट जायगा ।
पति का विनास होगा, पुत्र का न साथ होगा
फिर नारी जीवन की रहेगी मर्यादा क्या ?
जीवित रहूँगीं मै बनकर कलंकिनी रे,
प्राण पति–धातनी अपावनी पिशाचनी,
बात भी न मुझसे करेगे दास दासी तक
ऐसे नीच जीवन से मृत्यु कही श्रेष्ठ है ।"

राम उदास होइत बजैत छथि, "हमर माय एतेक दुर्बल छथि, इ हमरा बुझल नहि छल। हमर माय एतेक स्वार्थी छथि। हमरा तँ सुनीति सनक माय चाही, जे पाँच वर्षक ध्रुव के तपस्या करबाक लेल जंगल पठौने छलीह।" यथा :–

"दुर्बलता इतनी कहाँ की आ गयी तुझमे,
ऐसा स्वार्थभाव भी कहाँ का आ समाया है ?
आज तो अपेक्षा है सुनीति जैसी माताओं की,
भेज दिया वन मे जो पाँच वर्षी ध्रुव को ।
लाभ के प्रसाद होते हानियों की नीब पर,

हानियों के पिछे फहराते कीर्ति ध्वज भी ।"

एकरा बादो माता कैकेयी नहि घमलीह तँ राम पुनः माता कैकेयी के बड़ाई करैत छथि –

"मन की मैं सारी बात आज हूँ सुनाता तुझे
किसमे सामर्थ्य और मेरी सुन पावे जो।
तुझ जैसी माता और मुझ जैसा पुत्र जहाँ,
फिर क्यों न दूर होगा, हाहाकार जन का ?
कोटि–कोटि नर–नारि त्रस्त हो रहे है नित्य,
ऋषिगण भी भयभीत होते क्या रहेगे ?
शील हरा जा रहा है, नित्य नारियों का यहाँ
सिहर उठी है, यह पावन वसुन्धरा
रावण का अत्याचार बढ़ता ही जा रहा है।"

(कैकेयी का अंतर्द्वंद्व, पृष्ठ – 17)

रावणक तँ नामे सुनि क' माता कैकेयी स्तब्ध रहि गेलीह आ बजलीह, " अहाँ इ बचपना नहि करू। रावण साधारण लोक नहि अछि। ओकरा मारब बड़ कठिन काज अछि। सब देवता ओकरा बन्दी खाना मे कैद छथि।"

राम, "ते तँ आवश्यक अछि जे रावण कँ मारि, देवता लोकनि कँ मुक्त कराओल जाय। "

कैकयी बजलीह, "इ काज अहाँ सँ नहि होयत। अहाँ एखन बच्चा छी। अनुभव केर कमी अछि अहाँ कँ।"

राम , " बजलाह "–

"जिसकी माँ शम्बर का अन्त करें रणबीच
वह क्यों न क्षुद्र जीव रावण संघारेगा ?
कौशिक का सबल ज्ञान, माँ की आशिष जहाँ
वहाँ राम विजयी तो होकर रहेगा ही।"

कैकेयी का अंतर्द्वंद्व पृष्ट–18

एहि तरहें माता कैकेयी के बुझा सुझा क' राम वनवास योजना के पूर्ण करैत छथि।

8. वरदान

लोक कहैत अछि, कैकेयी सनक महत्वाकांक्षी केओ नहि छल। ओ राम के उपर सँ मानैत छलीह आ भीतर सँ द्वेष करैत छलीह। अखिर छलीहो तँ रामक सतमाय। आ सतमाय सँ लोक अपेक्षो एतबहि करैत अछि। जे सदिखन सतौतक अहित सोचथि, ओएह तँ सतमाय छथि आ रामायणक लेखक, रचनाकार सेहो एकरहि चरितार्थ कयने छथि। ओ सब महारानी कैकेयीक सम्मान वा बड़प्पन मे कतहु किछु नहि लिखने छथि, सिवाय देवासुर संग्रामक। आ ओएह महारानी कैकेयीक लेल, हुनका स्वभावक लेल आ हुनका जीवनक जीवन्तताक लेल बहुत अछि। महारानी कैकेयी की अनुचित कयलन्हि। देवासुर संग्रामक देल दू टा वरदान मँगने रहथि। कोनो अन्याय तँ नहि कयने रहथि। ओहो वचन तँ महाराज दशरथे देने छलाह। कैकेयी वक्सीश नहि मँगने छलथिन्ह। हुनकर वीरता पूर्ण कार्यकलाप देखि क' देने छलथिन्ह। मुदा जखन मंगलथिन्ह तँ कतए गेल को आदर्श :–

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाई बरू वचन न जाई।।

दाता के तँ पहिनहि सोचक चाही, जे हमरा सँ किछु माँगल जा सकैत अछि आ मंगलाक बाद इ किएक मंगलहु ओ किएक नहि मंगलहु इ उचित नहि। किन्तु महाराज दशरथक दोष केओ नहि देलक। जखन कि महारानी कैकेयी कोनो नव माँग केने नहि छलथिन्ह।

प्रथम वरदान भरत के राज्य इ तँ पूर्वहि मे महाराज दशरथ सँ महर्षि गर्ग वचन नेने छलाह आ अही शर्त्त पर महाराज दशरथ आ महारानी कैकेयीक विवाह भेल। यथा :–

पुरा भ्रातः पिता नः स मातरं ते समुद्वहन।
मातामहे समाश्रौषीद् राज्य शुल्कमनुत्तमम्।। 3

(बा0 रा. अ0 का0 सर्ग 107)

जखन राम के मनावक लेल भरत जी वन जाइत छथि तँ वन में श्रीराम कहैत छथीन्ह जे राज्यक अधिकारी तँ अही छी। अहाँक मातामह अश्वपति पूर्व में शर्त्त रखने छलाह जे कैकेयीक पुत्र राज्यक अधिकारी होमए आ अही शर्त्त पर महाराज दशरथ आ महारानी कैकेयीक विवाह भेल छलन्हि। तँ एकरा लेल माता कैकेयीके दोषी मानव मूर्खता छोड़ि दोसर किछु नहि थीक। एकर बाद महाराज दशरथ सेहो देवासुर संग्राम मे माता कैकेयी के दू टा वरदान देने छलथिन्ह यथा :–

देवासुरे च संग्रामे जनन्यै तव पार्थिवः।

सम्प्रहृष्टो ददौ राजा वरमाराधितः प्रभुः।। 4

(वा0 रा0 अ0 का0 सर्ग 107)

आइ महारानी कैकेयी के लोक जे अपयश दीए मुदा महारानी कैकेयी अपना मॉथ पर कलंकक टीका लगा क, महाराज दशरथ के नर्क जयवा सँ बचा लेलन्हि। जेना ऋषि लोकनि भरत सँ कहैत छथि, यथा :–

सदा नृणमिमं रामं वयमिच्छामहे पितुः।
अनृणत्वाच्च कैकेय्याः स्वर्ग दशरथो गतः।। 6

(बा0 रा0 अ0 का0 सर्ग 112)

अर्थातु हम सब श्रीराम के पिताक ऋण सँ उऋण देखए चाहैत छी। किएक तँ कैकेयीक ऋण चुका देलाक बादे महाराज दशरथ स्वर्ग गेल छथि। इ उक्ति छल ओहिठामक उपस्थित ऋषि मुनिक। जँ ककरहु देल वचन पुरा नहि कयला सँ नर्क होइत छैक, तँ महाराज दशरथ, महारानी कैकेयीक पिता अश्वपति कँ देल वचन तँ बिसरि गेल छलाह वा रामक प्रति प्रगाढ़ स्नेहक कारणे ओम्हर ध्यान नहि जाइत छलन्हि। हुनका तँ डर छल केवल महारानी कैकेयी केर आ ओहो रामेक पक्ष में छलीह तँ महाराज दशरथ निर्भिकता पूर्वक इ निर्णय नेने छलाह। महारानी कैकेयी तँ एकर कहिओ विरोध करवो नहि करितथि, जँ रामक इच्छा नहि होइत आ रामक इच्छा छलन्हि एकर संकेत तँ राम चरित मानस सेहो द रहल अछि यथा :–

तव कछु कीन्ह रामरूख जानी। अब कुचालि करि होइहि हानि।।

दोसर वरदान रामक वनवास, इहो तँ रामक चरित्र निर्माणक लेल माँगल गेल छल। वनवासक प्रतिफलें राम रावण पर विजय पाओलन्हि। देवताक उद्धार कयलन्हि आ धरतीक भार उतारलन्हि। धरतीक व्याकुलता कँ खतम कयलन्हि। जँ वनवास नहि होइत तँ इ सब सम्भव नहि छल। तँ एकरा जँ महारानी कैकेयीक दूर दर्शिता कहल जाय तँ अतिशयोक्ति नहि होयत। एहि वरदानक पाछाँ जँ किनकहु महारानी कैकेयी केर महत्वाकांक्षा झलकि रहल हो, तँ हुनका सँ हमर प्रश्न अछि,

महाराज दशरथ तँ महारानी कैकेयी सँ बाजल छलाह, यथा :–

लोभ न राम हि राज कर, बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट बिचारि जियँ, करत रहेउ नृप नीति।।

(राम चरित्र मानस अ0 का0)

अर्थात् हे सुलोचनि! अहाँ चौदह वर्षक लेल किएक जीवन भरिक लेल भरत के राजा बना दियौन्ह, हमरा कोनो कष्ट नहि होयत। राम के तँ राजक लोभो नहि छन्हि आ भरत के गद्दी पर देखि ओहो प्रसन्न होयताह। इ तँ हम छोट आ पैघक विचार करैत नृप नीतिक निर्वाह करैत छलहु। एकर पुष्टि आध्यात्म रामायण सेहे क रहल अछि यथा

राज्यं गृहाण पुत्राय रामस्तिष्ठन्तु मन्दिरे।
अनुगृह्लीष्व मां वामे रामाद्यन्नास्ति भयंतव।।28

(आ0 रामायण अ. का. सर्ग – 3)

एहि तरहें महाराज दशरथ तँ भरत कँ जीवन भरिक लेल राजा बना रहल छलाह मुदा महारानी कैकेयी मात्र चौदहे वर्षक लेल किएक माँगैत छलीह।

पुनरायातु तस्यान्ते वने वा तिष्ठतु स्वयमं
प्रभाते गच्छतु वनं रामो राजीवलोचनः।। 2।।

(आ0 रामायण अ0 का0 सर्ग – 3)

अर्थात् चौदह वर्षक बाद ओ अपना इच्छा सँ अयोध्या आवथि, वा बने में रहथि, इ हुनका पर निर्भर करैत अछि। मुदा–काल्हि प्रातः काल को अवश्य वन जाथि।

श्रीउमेश जीक अनुसारें :–

"कार्य सिद्धि होगा अब जननीअनुकम्पा से
जीवन सफल होगा निश्चय ही राम का

(कैकेयी का अंतर्द्वन्द्व पृ0 15)

श्रीराम माता कैकेयी के मनेवा मे सफल भ' जाइत छथि आ हुनका विश्वास भ' जाइत छनि जे माता कैकेयीक कृपा सँ सब कार्य जे ओ चाहैत छलाह भ' जायत।

"राम का राज्याभिषेक होगा तो अवश्य ही माँ,
किन्तु अभी, है बिलंम्ब चौदह वर्ष का।
मुख्य कार्य जीवन का शेष तो पड़ा है अभी,
धरणी अशान्त ही है शान्ति नहीं आयी है।
अत्याचार–भ्रष्टाचार–अनाचार फैल रहे,
फिर कैसे यौवराज्य भायेगा माँ राम को।"

(कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व पृष्ट – 16)

एहि तरहे रामक माया जाल वा प्रेम जाल में माता कैकेयी एहन फँसि गेलीह जे मात्र छटपटा रहल छथि, किछु क' नहि पवैत छथि। एक दिश रामक इच्छा, रामक कल्याण, दुनियाँक कल्याण, मानवताक कल्याण तँ दोसर दिश पति हन्ती, पति घातिनि, स्वार्थी विमाता आदि। ओ रामक देल वचन के पालन करवा में कतेक कठोर बनि गेलीह, एकर अनुमान हुनका अपनहु नहि छन्हि। जँ ओ कठोर नहि होइतथि तँ राम के देल वचन पूर्ण नहि क पवितथि। कर्त्तव्यक पालन लेल कठोरता आवश्यके अछि। कोनो बच्चा पढ़' नहि चौहत अछि, ओ स्कूल नहि जाय चाहैत अछि, तँ ओकर माँ–बाप कठोरता पूर्वक ओकरा स्कूल पठाबैत अछि, ओकरा पढ़बाक लेल विवश करैत अछि। कहबाक भाव इ जे बच्चाक भविष्य सँवारक लेल, ओकरा जीवनक लेल माय–बाप के कठोरताक नाटक करए पड़ैत छैक। आ ओहि कठोरता सँ राम अवगत छलाह। किएक तँ दूनू क' बीच में गुप्त मंत्रणा भेल छल मुदा महाराज दशरथ प्राणक मोह में, जीवनक मोह में राम सँ अलग नहि होमए चाहैत छलाह।

9. वनवासक तैयारी :

राम वनवासक लेल दोषी महारानी कैकेयी के मानल जाइत अछि मुदा एकर योजना तँ श्रीराम आ सीता दूनू मिलि क' बनौने रहथि।

राम चरित मानस केर अनुसार जखन नारद जी ब्रह्मा जी क अनुमति सँ प्रभु श्रीराम सँ निवेदन करैत छथि, हे प्रभु श्रीराम, जगत केर स्वामी, अहाँ तँ स्वयं सब किछु जनैत छी, मुदा कष्ट मे रहनिहार के होइत छैक जे कतेक जल्दी हमरा कष्टक निवारण होयत। कष्ट हरनिहार कतहु बिसरि तँ ने गेलाह। ओ इ नहि जनैत अछि जे हमरा दुःख सँ वेशी चिन्ता हमर दुःख हरनिहार के छैन्हि। कष्ट हरनिहार कतेक व्यग्र रहैत छथि इ तँ केवल तुलसीदास जनैत छथि।

जखन श्री भरत जी चित्रकूटधाम श्रीराम जी सँ भेंट करबाक लेल जाइत छथि, तँ ओहिठाम श्री रामक व्यग्रताक दृश्य देखू, यथा :–

"उठे रामु सुनि प्रेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा।।

अर्थात् श्रीराम अपना भक्तक लेल एतेक प्रेम विह्वल भ' जाइत छथि जे अपना देहक सुधि सेहो बिसरि जाइत छथि। हम जनैत छी, अहाँ किछु नहि बिसरल छी। तथापि श्री ब्रह्माजीक आज्ञा सँ अपनेक निवेदन मे आयल छी।

श्री राम, "हे नारद! ब्रह्माजीक आज्ञा की अछि" ?

नारद, हे राम! एहि त्रिभुवन में ककरा सामर्थ छैक जे अहाँ के आज्ञा देत। अपने जाहि कार्यक लेल अवतार धारण कयने छी, से कोना पूर्ण होएतैक। एहि सम्बंध में देवता लोकनि आ हमहू भ्रमित भ' रहल छी।

श्री राम, "हे, नारद! हम जाहि कार्यक लेल आयल छी, से अवश्य करब। अहाँ सब कनेको चिन्ता नहि करु"।

नारद, " हे प्रभु श्री राम! अहाँ कें ओ कार्य करबाक लेल वनवास चाही मुदा महाराज दशरथ, सब महारानी आ आयोध्या वासी अहाँ के एको क्षणक लेल आँखि सँ ओझल नहि होमए दैत छथि, अहाँक राज्याभिषेकक तैयारी भ' रहल अछि। एहेन स्थिति में वनवास कोना। इएह द्वविधा हमरा सभक अछि। "

श्री राम, "अहाँ सब कनेको चिन्ता नहि करु। ओकर इन्तजाम भ' गेल अछि। हमर जे सब सँ प्रिय माता छथि, ओ हमरा काज मे सहयोग क' रहलीह अछि। ओहि समय में श्री सीताजीक वयस अठारह वर्षक आ

श्रीरामक वयस–सताइस वर्षक छलन्हि। ओ दूनू गोटे विचार कयलन्हि, आब राज–काज के त्यागि, जाहि कार्यक लेल आयल छी, से करबाक चाही।'' यथा :–

तब रघुपति सीतहि समुझाई। पूर्व कथा सब हेतु सुनाई।।
सुर हित लागि सो करिअ उपाई। चलिए वन परिहरि ठकुराई।।
(राम चरितमानस अ. का. क्षेपक)

कहबाक तातपर्य जे महाराज दशरथक निर्णय सँ पूर्वे इ निर्णय भ' गेल छल जे रामक वनवास होयत आ इ निर्णय लेलन्हि श्री राम आ जानकी महारानी दूनू मिलि क'। जखन महाराज दशरथक आज्ञा सँ मुनि वशिष्ठ राम कें आ सीता के ब्रह्मचर्य ब्रतक पालन लेल निर्देश द' रहल छथि तँ ओहि सँ पूर्व कहैत छथि :–

देव कार्यार्थ सिद्धयर्थ भक्तानां भक्तिसिद्धये।
रावणस्य बधार्थाय जातं जानामि राघव।।24
(आ0 रा0 अ0 का0 सर्ग – 2)

अर्थात् हे राम! हम जनैत छी, अहाँ देवताक कार्य सिद्ध करवाक लेल, भक्तक भक्ति सफल करबाक लेल आ रावण केर बध करबाक लेल अवतार लेलहु अछि। तथापि हम मात्र महाराज दशरथक आज्ञाक पालन क' रहल छी।

वनवास अवधि में जखन भरत केर संगे अयोध्यावासी चित्रकूट गेलाह तँ ओहि ठाम श्रीराम सँ भेंट करबा मे माता कैकेयी के संकोच भ' रहल छलन्हि। ओ सोचैत छलीह, हमरहि कारण राम के एतेक कष्ट भेलन्हि अछि। ओ बजैत छथि, हे राम। अहींक माया सँ मुग्ध चित्त भेलाक कारणे हम अहींक राज्याभिषेक मे बाधक भेलहु। अहाँ हमरा क्षमा करू। अहाँ साधु छी आ साधु केर स्वभाव क्षमाशील होइत छैक। अहाँ माया मनुष्य रूप सँ समस्त संसार के मोहित क रहल छी। अहींक प्रेरणासँ लोक शुभ आ अशुभ कार्य करैत अछि। जहिना कठपुतरी सूत्रधारक इच्छानुसार नाच करैत अछि, तहिना इ संसार अहाँक इशारा पर आ अहींक इच्छानुकूल नाचि रहल अछि। हे राम! देवताक कार्य सिद्ध करवाक इच्छा सँ, अहींक द्वारा

प्रेरित भ' क' अपन दुष्ट बुद्धि सँ इ पाप कयलहु। हे विश्वेश्वर हम अहाँक शरण में छी। अहाँ अपन ज्ञानाग्नि रूपी खड़ग सँ हमर पुत्र आ धन आदिक स्नेह कें काटि दीअ'।

यदाह मां महाभागे नानृतं सत्यमेव तत्।
मयैव प्रेरिता वाणी तव वक्त्राद्विनिर्गता।।63
(आ0 रा0 अ0 का0 सर्ग – 9)

अर्थात् हे महाभाग ! अहाँ जे किछु कहल अछि, सबटा सत्य अछि। हमरहि प्रेरणा सँ देवताक कार्यक सिद्धिक लेल, अहाँक मुँह सँ इ शब्द निकलबाओल गेल छल। एहि में अहाँक कनेको दोष नहि अछि।

मानस के अनुसार जखन भरत जी राम के मनाबक लेल चित्रकूटक बाट धयलन्हि, तँ देवता लोकनि के अंदेशा भ' गेलन्हि। कदाचित भरत राम के घुरा ने लेथि। रामक प्रति भरतक अविरल प्रेम देखि देवता लोकनि अधीर भ' गेलाह आ ओ आब पुनः कुचक्रक रचना में लागि माता सरस्वतीक शरण में गेलाह। हुनका सँ प्रार्थना करए लगलाह जे कहुना भरत घुरिक आपस अयोध्या चल जाथि। अहाँ एहेन उपाय करु जे राम आ भरत के भेंट नहि होमए पावए। मुदा ओ सब अपना चालि में विफल भ' गेलाह। यथा :–

मायापति सेवक सन माया। करई तँ पलटि परई सुर राया।।
तब कछु कीन्ह राम रूख जानी। अब कुचालि करि होइहि हानि।।
सुनु सुरेश रघुनाथ सुभाउं। निज अपराध रिसाहि न काउ।।
जो अपराध भगत कर करई। राम रोष पावक सो जड़ई।।
(राम चरितमानस अ0 का0)

उपरोक्त चौपाई सँ स्पष्ट बुझना जाइत अछि जे वनवासक योजना में महारानी कैकेयी केर भूमिका में कतहु ने कतहु प्रत्यक्ष व परोक्ष रूपे श्री राम सेहो छथि। जखन महाराज दशरथ रामक राज्याभिषेकक निर्णय लेलन्हि तँ ओहि–क्षण स्वयं श्रीराम राज्य नहि चाहैत छलाह, जे निम्न चौपाई सँ स्पष्ट भ रहल अछि :–

जनमे एक संग सब भाई। भोजन सयन–केलि लरिकाई।।
करन बेध उपबीत बिआहा। संग–संग सब भये उछाहा।।
बिमल वंस यहु अनुचित एकू। बंधु विहाई बड़ेहि अभिषेकू।।
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई। हरहु भगत मन के कुटिलाई।।

(रामचरित मानस अ0 का0)

उपरोक्त चौपाई सँ बुझना जाइत अछि जे राम एसकर राज नहि चाहैत छलाह। ओ चाहैत छलाह, जहिना चारू भायक जन्म एक संग भेल, उपनयन एक संग भेल आ विवाह सेहो एक संग भेल। तहिना राज्याभिषेक सेहो एक संग चारु भायक होयबाक चाही। इ तँ सम्भवो नहि छल। राज्याभिषेक तँ कोनहु एके व्यक्तिक भ' सकैत अछि। आ वन सँ आपस अयलाक बाद तँ एहन विचार व्यक्त नहि कयलनि। एहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे ओहिकाल ओ अयोध्याक राज नहि, कानन के राज चाहैत छलाह ओ सख वा मनोरथ हुनकर प्रिय माता कैकेयी पूर्ण कयलथिन्ह। श्री उमेशजीक अनुसारें :–

"आजतो निमंत्रित है दूर के नृपति किंतु
बंचित है मेरे पिता बन्धु और पुत्र ही।
न्याय क्या यही है नाथ, आप ही विचार करे।
उनका अपराध क्या था, त्यागा क्यों उन्हें ही?
सीधे भरत जैसे पुत्र पर विश्वास नही,
भेज दिया दूर और राज्य दिया राम को"

(कैकेयी का अंतर्द्वन्द्व पृष्ठ – 47)

अर्थात्‌ रामक राज्याभिषेकक तैयारी में सब कें बजाओल गेल छल, मुदा कैकेयी के नैहर खबरि नहि देल गेल छल। भरत तक के कोनो सूचना नहि देल गेल आ एकरहि हथियार बना क' महारानी कैकेयी महाराज दशरथ पर वार कयने छलीह। महाराज दशरथ क' विनय सुनि ओ व्यग्र भ' 'जाइत छथि, दुविधा में परि जाइत छथि। की कयल जाय, की नहि यथा :–

'भय से जिसके है भीत सारा भुवन देवि
पदाघात से है प्रकम्पित बसुन्धरा।
वसुधा का वैभव भी चरणों पर जिसके है
विजय–वैजन्ती फहराती है व्योम में।

रघुकुल–भूषण चक्रवर्ती सम्राट वही,
लुण्ठित है आज देवि पाँव पर तुम्हारे

(कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व पृ. 49)

महारानी कैकेयी अपरोक्त विनय सुनि घामए लागैत छथि। हुनकहु हृदय चित्कार क' उठैत अछि यथा :–

"पति की मर्यादा को बचाना है पत्नी का धर्म
कैसे छोड़ सकती हूँ मैं मर्यादा कुल की
पति का विनास देख सकती है कौन नारी
पति का सर्वस्व लेकर जायेगी कहाँ वह"

(कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व पृ. 50)

मुदा हुनका रामक कहल गप्प मन पड़ैत अछि यथा :–

"किन्तु मेरे राम का अधूरा ही रहेगा कार्य
कौन जाने मैं ही जो पूरक बन आयी हूँ।
किन्तु मुझको लोग तो कहेगें भुजँगिनि ही,
प्यारे राम के ही हेतु सह लुँगी सब मै।"

(कैकयी का अन्तर्द्वन्द्व पृ. 27)

10. **दशरथक मृत्युक कारण :–**

ओना तँ दुनिया बुझैत अछि जे रामक बनवासक व्यथा महाराज दशरथ बर्दास्त नहि क' सकलाह आ परलोक चल गेलाह। चूकि इ वरदानक बाद भेल छैक, तँ ओकरा लेल लोक सब पूर्ण दोषी महारानी कैकेयी कें मानैत अछि। मुदा एकर प्रमुख कारण छलैक तापस केर श्राप। आ ओ तँ भोगव छलन्हिये। जखन स्वयं श्रीराम नारद जी क' श्राप अंगीकार क' सकैत छथि तँ महाराज दशरथ की छलाह ? जकर चर्चा मानस में सेहो अछि :–

कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा।

श्रवण कुमार तापस केर पुत्र छलाह। तापस दूनू प्राणी ऑन्हर छलाह। एक मात्र हुनकर जिविकाक व्यवस्था करब श्रवण कुमारक कार्य छलैक। आ ओहि में ओ लगलो छलाह मुदा महाराज दशरथक हाथ सँ हनकर मृत्यु भ' गेल। यथा :–

ततोऽहं शरमुद्धृत्य दीप्तमाशीविषोपमम्।
शब्दं प्रति गज प्रेप्सुरभिलक्ष्यमपातयम्।।23

(बा0 रा0 अ0 का0 सर्ग – 63)

अपना यौवनावस्था मे महाराज दशरथ शब्द बेधी वाण क' विशेष प्रयोग करैत छलाह। राति अन्हार छलैक। सरयुग नदी में श्रवण कुमार अपना प्यासल माँ–पिताजीक लेल जल भरबाक लेल गेलाह। जैखन ओ नदी भे जल भरैत छथि कि हुनका हृदय में बाण लागि गेल आ ओ धरती पर खसि पड़लाह। हुनका जल भरबाक आवाज सँ महाराज दशरथ के बुझायल जे कोनो हाथी जल पिबि रहल अछि आ ओ शब्दबेधी बाण चला देलन्हि। मुदा जखन, ओ श्रवण कुमारक आवाज सुनलन्हि तँ दौड़ल गेलाह मुदा ओहि बाण सँ श्रवण कुमारक बाँचव अंसम्भव बुझना गेलन्हि। ओ बहुत अफसोस कयलन्हि। श्रवण कुमार महाराज दशरथ सँ प्रार्थना कयलन्हि हे राजन्! हम तँ आब अपना माता–पिताक सोझां नहि जा सकैत छी। अहा जा' क' हुनका हमरा विषय मे सूचना द' दिऔन्ह मुदा ध्यान राखब, इ गप्प हुनका प्रसन्न भेलाक बाद कहबन्हि अन्यथा हुनका क्रोध सँ जरि क' भस्म भ' सकैत छी।

न त्वामनुदहेत् क्रुद्धो वनमग्निरिवैधितः।
इयमेकपदी राजन् यतो में पितुराश्रमः।।44

(बा0 रा0 अ0 का0 सर्ग – 63)

श्रवण कुमारक गप्प सुनलाक बाद महाराज दशरथ कोनो तरहें अपना के संयमित करैत घैल के जल ल' क' ओहि कुटी में गेलाह, जकर बाट श्रवण कुमार देखौने छलथीन्ह।

ओहि ठाम मुनि (तापस) केर सोझाँ जा' क' ओ सब गलती स्वीकार कयलन्हि आ बजलाह, अनजान मे इ हमरा सँ गलती भ' गेल। यथाः–

अज्ञानाद् भवतः पुत्रः सहसाभिहतो मया।
शेषमेवं गते यत् स्यात् तत् प्रसीदतु मे मुनिः।।19

(बा0 रा0 अ0 का0 सर्ग – 64)

मुनि उत्तर देलथिन्ह, हे राजा! अहाँ अनजान मे हमरा पुत्रक बध केलहु तँ अहाँ के ब्रह्म हत्या तँ नहि लागत मुदा जल्दीये अहूँक संगे इ पराभव होयत। अहूँ के एहने भयानक आ प्राण लेब बला अवस्था प्राप्त होयत। ठीक ओहिना जेना दक्षिणा देनिहार दाता के ओकर अनुरूप फल भेटैत छैक। यथा :–

त्वामप्येता दृशो भावः क्षिप्रमेव गमिष्यति।
जीवितान्त करो घोरो दातारमिव दक्षिणाम्।।56

(बा0 रा0 अ0 का0 सर्ग – 64)

राम चरितमानस में सेहो एकर संक्षिप्त चर्चा कयल गेल अछि। जखन प्रभु श्रीराम वन सँ आपस सुमंतकसंग नहि अयलाह, तखन महाराज दशरथ के तापस केर देल श्राप मन पड़लहि ओ महारानी कैशल्या सँ कहैत छथि :–

विलपत राउ बिकल बहुभाती। भई जुग सरिस सिराति न राति।।
तापस अंध साप सुधि आई। कौसल्यहि सब कथा सुनाई।।

एहि सम्बन्ध में एकटा आर पूर्व जन्मक कथा अछि। जकर वर्णन रामचरित मानस अयोध्या काण्ड (क्षेपक) में भेल अछि। मंथरा पूर्व जन्म में यक्षिणि छल। ओकर बेटी–जमाय मृग रूप में वन बिहार करैत छल। महारानी कैकेयी केर पिता ओहि मृगा के शिकार कयलन्हि आ ओकरा मारि क ल' गेलाह। जखन मृगी अपना माय (मंथरा) के ओ समाचार सुनौलक तँ मंथरा कैकेयीक पिता सँ अपन मरल जमायक याचना केलक। ओ बाजल हे राजा। इ मृगा हमर जमाय थीक। एकरा आपस क देल जाऊ। हम एकरा जिआ लेव। मुदा राजा ओ मृगा तँ आपस नहिए कयलन्हि, ओकरहु मारि

देलन्हि। मरैत काल ओ मृगी (मंथरा) संकल्प केलक, "जहिना अहाँ आई हमरा जमाय के मारि हमरा बेटी के बिधवा बनाओल अछि, एक दिन हमहू अहीक बेटीक हाथे, अहाँक जमाय के मरवा, अहाँक बेटी के विधवा बनायव। ओएह यक्षिणि आई मंथरा के रूप में कैकेयी के बहला–फुसला क राम के वनवास दिऔलक आ महाराज दशरथ क' प्राण ल' कैकेयी के विधवा बनौलक।

श्री उमेश जी क अनुसार – महाराज दशरथ के अपन कयल कर्म मोन पड़ैत अछि आ ओ बजैत छथि जे हमर अन्तिम घड़ी आबि गेल। एहि मे महारानी कैकेयीक कोनो दोष नहि अछि। यथा :–

"आह ध्यान आया अब मेरी है अन्तिम घड़ी
दोष कैकेयी का नहीं मैं तो अभिषप्त हूँ।
व्यर्थ कटु वाक्य कहे मैंने तुम्हें छोटी रानी
क्षमा करो देवि! ग्लानियों में गला जाता हूँ।

(कैकयी का अन्तर्द्वन्द्व पृ.76)

लेखक परिचय

नाम : नंद कुमार मिश्र
जन्म : २ जनवरी १९५०
जन्म स्थान : भैरव बलिया (मातृक)
ग्राम एवं पत्रालय : उफरदाहा
थाना : बहेरा
जिला : दरभंगा
पिता : श्री बैद्यनाथ मिश्र
सरल चित्त, साधु स्वभाव,उदारमना, एवं धर्म परायण।
माय : स्व0 श्रीमती गोसाउनी देवी
करूणामयी, सहृदया, धर्म परायणा।
शिक्षा : स्नातक(कला), संगीत प्रभाकर
वृत्ति : लेखापाल, विद्युत अंचल भागलपुर
रूचि : व्यंग्यै रचना
प्रकाशित पोथी : विधात्री(कविता संग्रह) २५ /०४ /०४
गाम-घर(कथा संग्रह) २६ /१२ /०४
सुजाता (उपन्यास) २४ /०१ /०६

नंद कुमार मिश्र